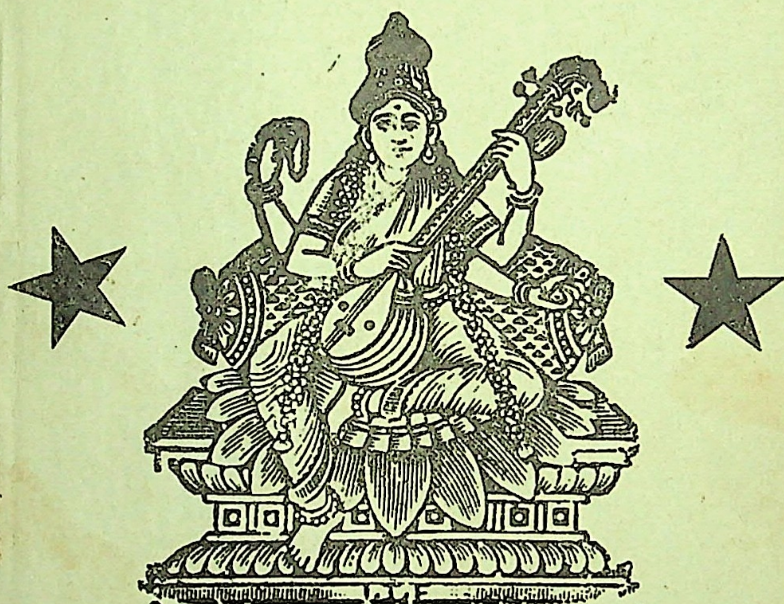
८१वां ज़ख्म

* 'वैहशी' पठानकोटी *



Published by :-

BANSI LAL SAGAR

PATHANKOT.

Price Rs. 2·00

८१वां ज़ख्म

* 'वैहशी' पठानकोटी *



Published by :-

BANSI LAL SAGAR

PATHANKOT.

Price Rs. 2·00

Printed by
Kul Bhushan Sawhney at Sawhney Printing Press, Pathankot
and published by
Bansi Lall 'Sagar' Mohalla Karam Singh Pathankot



RAJ BHAVAN,
CHANDIGARH.
14th March, 1961.

Dear Parshotam Lall Waishi,

I have your letter and I have decided to give you Rs.50 in appreciation of the book you have written. That amount will be sent to you in the Ist week of April, I appreciate the sentiments expressed in your letter and I do hope that you will continue your efforts on the lines on which you have already started.

Yours sincerely,

N.V. Gadgil

(N.V. GADGIL)

Shri Parshotam Lall Waishi,
c/o National Hotel,
Pathankot.

Kul

उन्हां शहीदां दे नां जिन्हां
ने देश प्यार लई अपनियां
जवानियां नूं गाल के
सानूं आज़ादी दी
देवी दे दर्शन
कराये ।



सूचना :-

ऐस किताब विच कम्पाज़ीटर तों कईयां कवितावां विच किते २ कोई २ लफ़ज़ गलत लिखिया गया है जिदी सूत्री किताब दे आखिर विच दिती गई ऐ ।

बन्सी लाल 'सागर'

दि० ९५-११-६०

इस छोटीं सी किताव में पुरुषोतम लाल जी ने उन की कुछ पंजाबी रचना देवनागरी लिपि में प्रकाशित की है। देश आज़ाद होने के बाद अलग अलग भाषाओं के प्रगति के लिए और देश की एकता के लि नज़दीक जाना चाहिए और अनेक भाषा बोलने वाले लोगों में साहित्यक विचारों का आदान प्रदान होना चाहिए। भारत की १४ भाषाएं पण्डित नेहरू जी ने राष्ट्र भाषा में मानी हैं। इस दृष्टि से मातृभाषा के अलावा अन्य भाषा पढ़ना आवश्यक है। व्यक्तिगत दृष्टि से और राष्ट्रीय दृष्टि से अगर अगर भारत की सब भाषायें एक लिपी में लिखी जाय तो बहुत सुविधा होगी। हरेक भाषा को अपनी अपनो लिपि हो लेकिन उस के साथ देवनागरी लिपि में लिखने को भी इष्टता है जैसा मैं मानता हूं। जो हर भाषा की मान्य लिपि हो वह अवश्य रहेगी लेकिन उस के साथ देवनागरी लिपि का भी उपयोग किया जाये तो विविध भाषा मे लिखा हुआ साहित्य, विचार, संपत्ति, अगणित लोगों के लिये प्राप्त होगी।

इस छोटे ग्रंथ में जो साहित्य है वह भावना से भरा हुआ और प्रेरणा पूर्ण है। मैं लेखक का अभिनन्दन करता हूं।

(हस्ताक्षर)

न० वि० गाडगिल

❖ वधाई ते आशीर्वाद ❖

वैहशी दी हत्थली कित पंजाबी मात बोली नूं दूसरी वहुमुल्ली देन एं। एस तों पहलाँ एह शायर 'तेग दी धार ते' नामक पुस्तक मां बोली दी भेंट कर चुकया ए। एस पुस्तक ने पंजावी भंडार विच इक होर दा वादा कीता ए। जिस लई पंजाब ते पंजाबी भाषा वैहशी दे एहसानमन्द रहनगे।

वैहशी दी कलम विच भगवान ने अथाह शक्ति भरी ए। एहदी नोक तों किरया हर नुक्ता देश प्यार दा अनसीमा सागर ए। अज जद कि स्टेजी शायरी 'ते खास तौर ते पंजावी स्टेजी शायरी' क्वाड़खाने दा रूप बन चुकी होई ए। हर कवि ऐसे कोशिश विच रुझा नज़र आऊंदा ए कि हर रस नाल भरपूर कविता दी वंगी अपने सरोतियां नूँ भेंट कर सके। (भावें ओह ऐस यत्न विच कदे वी सफल नहीं हो सकया) वैहशी अपनी लग्न विच मग्न इक्को लीह ते पक्के पैर टकाई चलया जा रिहा ए ते किसे वेले वी एहदी चाल विच फ़र्क आया अनुभव नहीं कीता जा सकदा। ऐदे जवान पुरदर्द भरे दिल दियां चीसां सदा वीरता रस विच गुड़च होके निकलियां ने ते कमज़ोर तों कमज़ोर पर जिऊंदे दिलाँ नूं मान सत्कार भरी नवीं ज़िंदगी दा हलूना दे जांदियां ने "राणा साँगा" (इकासिवां ज़ख्म) मेरे ऐस विचार दी पुष्टी लई सोहनां ते न रद्या जा सकन वाला सबूत ए। "नच उठांगे तलवारां ते" "हिम्मत नाल यराना तेरा" "एह मन्जिल ए सब तों औखी" ते "ज़िंदा रहेगा नाँ पंजाबियाँ दा" वरगियाँ कवितावां देश वासियाँ नूं देश प्यार लई वंगार रहियाँ

ने। "पट वजाने दोस्ता ने वड़े सुखल्ले" "फटल सानूं प्यारां ने जिहा कीता" "मेरे वसदे रसदे देश अन्दर" "घर घर जम्मना रांझयां ने" "इश्क" ते "पो पी के रंगे वेखना" व्यंग भरियां कवितावां ने जो फ़र्ज़ों भुल्ले हिन्दीं नौजवान नूं झंजोड़ २ के जगान दा कम करनगियां। इस तों इलावा वैहशी दा क्लाम तोल तोकांत दी शिखर नुँ छू रिहा ए। कीह मजाल जे किते रता जिन्नाँ वी ठेडा खाधा होवे। आप मुहारे चश्मे वांगूं वज्झवीं ल ते ढुकवें शब्दां दो इक अटुट लड़ो पुरचदी चली जा रही ए। जिस विच किते वी कोई गन्ढ जाँ रड़क नहीं भासदी। मैं वैहशी जी नुँ ओहनां दी एस दूसरी कामयाब कोशिश ते दिली वधाई दैंदा ते भगवान अग्गे प्रार्थी हां कि ओह ऐस सुचज्जे कवि दी कलम नूं होर वी बल बख्शन जो एह देश दी ज़्यादा तों ज़्यादा सेवा कर सके।

बटाला—१२-१०-६०

बरकत राम 'युमन'

मेरा इह दावा ए कि पंजाबी बोली नूँ ज़िंदा रखन वाले हिन्दु ते मुस्लमान कवि हन एह दस्सना कि पंजाबी बोली पंजाब विच कदों दी बोली जांदी ए। बड़ा मुश्किल ए पर ऐस गल विच कोई शक नहीं कि हज़ारां सालां तों पंजाब दे हिन्दू मुस्लमान वसनीक अते कुझ चिर तों सिख ऐस साँझी मां दी मिट्टी अते निग्घी गोद विच पल के जवान हुन्दे जवानियां मानदे प्यार भरे जीवन गुजारदे आ रहे ने। पर ऐहदी लिखती सेवा पहलों हिन्दू ते मुस्लमान कवियाँ ने कीती। दामोदर, पीलू, मुकबल, वारिस, बुल्हे शाह ने इश्क दे किस्से, लड़ाईयां दियां वारां, अते सूफी मत विच रंगीलियां काफियां लिखियां उन्हाँ ने ऐस मां बोली दी सेवा ते अपने वितों वध के कीती पर अज तक फिर्का प्रस्ती दा रंग दे के एहनूं अन्हें वांगू जट जफ्फा मारन दी कोशिश नहीं कीती उन्हाँ विच मां बोली लई प्यार अते सेवा दा भाव कुट कुट के भरया होया सी। ओसे प्यार जज़बे दे मातहत पुरशोतम लाल वैहशी ने भी कवितावां लिखियां ने ऐहने वी किसे ते ऐहसान नहीं कीता अपना फर्ज़ पूरा कीता ए।

सारी किताब पढ़न ते पता लगदा ए कि वैहशी दी बोली शुद्ध ते साफ सुथरी ख्यालां दी उडारी उच्ची, अखानां दी बन्धश ढुकवीं ते फबवीं अते वज़न विच पकयाई ए। किसे दी कविता नूँ परखन लगयाँ इन्हाँ चीज़ां नुं वेखन दी लोड़ हुन्दी ए जेहड़ियाँ ऐस कवि दी कविता विच मुंहों बोल रहियाँ ने।

मैं वैहशी जी दे जीवन तों उन्ज वी चंगी तरहां वाकफ हां इन्हां ने जद तों होश सम्भाली ए सारा जीवन देश दी सेवा विच ला दिता ए। घरों पुजदी सामी ने कोई फिकर फाका नहीं सी अते

सारी उमर देश सेवा दे रुझेवयां विच ही रुझे रहे ने। ऐसे करके इन्हां दियां कवितावाँ वी देश भक्ति दियाँ मुँह बोलदियाँ तसवीरां ने। इक इक शेर विच देश प्यार दा रंग डलकां मारदा ए। होर ते होर कवितावां दियां सुरखियां अमर शहीद ऊधम सिंह, आज़ादी, बापू गांधी, सुभाष, अते राणा साँगा वगैरा दा इक इक अक्खर ऐह दस रिहा ए कि कवि दे कीह विचार ने उह कित्थे खलोता ए अते ओहदा अस्थान की ऐ; शमां परवाना, फुल बुलबुल, अते इश्क मुशक दी रंगन तों ऐहनाँ दियां कवितावां बिल्कुल कोरियां ने ऐह योधियां नुं वंगारदे लिखदे ने।

"लुडियां पाऊदे नचदे जद तेगां गिद्दे पान
योधे मौत कबूलदे पर सहिंदे नहीं अपमान"

"दंदे ने इतिहास ग्वाहियां मरना वडी शान वतन तों।

देश आज़ादी दी जंग विच पंजाबियां दा हिस्सा अते कुर्बानियां दा जज़बा दसदे होये लिखदे ने।

"कफ्फन बन्ह के सिरां ते देश खातिर,
सदा मानया मान पंजाबियाँ ने।
लाके जिंद जवानी नुं दा उते,
कीता देश जवान पंजाबियाँ ने।"

होर वेखो डल्हौज़ी वरगी पहाड़ी दियां ठंडियां २ हवावां रंग बरंगे फुल्लां नाल हरियां भरियां होईयाँ पहाड़िहां समेत घिरे होये पंजपुल्ले वरगे ठण्डे ते मिट्ठे पानी दे चश्मयां दी उपमा करदे होये जद देश भक्त स्वर्गीय सरदार अजीत सिंह दी समाध ते पहुंचदे ने ते सब कुझ भुल जांदा ए अते अपने देश प्यार दे जज़्बे

नुं रोक नहीं सकदे ओसे ई रंग विच उन्हां दे दिल दी आवाज़ बोलदी ए।

जिस मिट्टी ते पये ने पैर तेरे, ओस मिट्टी दा बन के गुलाम आयां।
कासा लै के वतन प्यार वाला, पीन वतनप्रस्ती दा जाम आयां।

जे किते भुल के इश्क ते कविता लिखी ऐ ते रूप जवानी दी तारीफ करन दी थां बुड्डे बुजुर्गां वांगू जवान मुन्डयाँ नुं समझावना शुरू कर दिता ऐ।

इश्क अन्हयां करे सुजाखयां नुं,
दिल नुं सांभ ते जुल्फ जंजीर तों बच।
चोला देश प्यार कि रंग वैहशी,
सस्सो सोहनी ते वारिस दी हीर तों बच।

ऐह शेर दसदा ऐ कि कवि ने जवानी दे दिनां विच वी अपने दिल अते कलम ते काबू पाया होया सी।

वैहशी जी मुन्डयां दे फैशन नुं वेख के बड़े औखे हुन्दे ने। उन्हां दी औख्याई ऐस शेर तों ज़ाहिर हुंदी ऐ लिखदे ने :—

जेहड़ी कौम विच नाज़क अंदाम जम्मे,
होके जग दे विच बदनाम मर गई।
फैशन वालियां कौमां दा हशर की ऐ,
कोई सुबह मर गई कोई शाम मर गई।

इञ्ज मालूम हुंदा ऐ कि उन्हां दे दिल विच देश भक्ति तों वध के होर कोई जज़्बा नहीं अते उन्हां होर किसे विषय ते अपनी कलम दा ज़ोर वखाऊन दा यत्न नहीं कीता आखर विच ओह आखदे ने :—

मैं हिन्दी अपने फर्ज़ां तों कदी वी उक नहीं सकदा।
मेरा जज़्बा तूफानी ऐं कदे वी रुक नहीं सकदा।

वड़ी वारी ज़माने ने मैनुं अज़मा के तकया ऐ।
ऐह वैह्शी मर ते सकदा ऐ, कदी वी झुक नहीं सकदा।
ऐह चार मिसरे कवि दी अनख दी बोलदी तसवीर नें।

जिस तरह. झनां दे पानी विच इश्क दी अते सुतलज दे पानी विच देश भक्ति दी तसोर ऐ। ओसे तरहां वैह्शी जी दी ऐह किताब देश वासियां विच देश प्यार दा जज़्बा पैदा करन लई जादू दा असर रखदी ऐ। ऐस किताब नुं पढ़ के मुटयारां अपने भरावां दे दिलां विच देश प्यार दा जज़्बा भर के आज़ादी नुं सांभन दी तड़प पदा करनगियां। मांवां अपने बचयां नुं देश प्यार दियां लोरियां दे २ के पालनगियां अते नौजवान मुन्डया दे डौले देश प्यार दियां कवितावां पढ़ के फड़कन लग पैनगे। मेरा ऐह यकीन ऐं कि लोकी ऐह कवितावां अपनियां धीयों भैनां नुं पढ़ावन लगयो शर्म नहीं बल्कि खुशी महसूस करनगे अते उन्हां नुं सोचन दी लोड़ नहीं पवेगी। स्कूलां ते लाइबरेरियां दे प्रबन्धक नक नहीं वट्टनगे सगों उस्ताह प्रगट करनगे अते इन्हां नुं पढ़न नाल नवें पोच दे दिलां विच देश भक्ति अते देश सेवा दी सद्धर पैदा होवेगी।

ऐह किताब देवनागरी हिन्दी अक्खरां विच छाप के दसया ऐ कि पंजाबी बोली देवनागरी फार्सी अते गुरमुखी तिन्नां लिपियां विच लिखी जा सकदी ऐ। ऐह कवितावां दी दूजी किताब ऐ। जेहड़ी हिन्दी अक्खरां विच छपी ऐ। इस तों पहला मैं अपनियां कवितावां दा संग्रह "अपना आप" सन् 1943 विच हिन्दी अक्खरां

विच छापया सी जेहड़ी लोकां ने बड़ी सलाही अते ओहदी कदर कीती पर ओह लाहौर किताबा वेचन वालियाँ दियां अलमारियां विच रह के बटवारे दी भेंट हो गई।

मैंनूं यकीन ऐं कि वैहशी जी दी ऐह किताब देश लई बड़ी लाभदायक होवेगी अते वेले दी इक वड्डी लोड़ नुं पूरा करेगी।

जालन्धर
1-11-160

जसवन्त राय 'राय'

वैहशी साहिब की शायरी

मुहत्रमी पुरशोतम लाल साहिब वैहशी का नाम नामी तो मैं ने मुद्दत से सुन रक्खा था मगर उनका क्लाम सुनने की अवलीन सुआदत मुझे आज से एक साल पहले धर्मशाला ज़िला (कांगड़ा) के एक मुशाइरे में नसीव हुई और इस में ज़रा भी तसन्ना या मुबालिग़ा नहीं कि मैं ने उन के क्लाम में वे तमाम खूबियां मौजूद पाईं जो एक हकीकी और रहबर शायर के क्लाम में होनी चाहिएं।

वैहशी साहिब नज़्म के शायर हैं उन्हों ने अपनी नज़्मों में हुबुलवतनी के बलन्दतरीन जज़्बात की निहायत कामयाब तरजमानी की है और उन के खलूसे जज़्बात का यह आलम है कि हर शेर में उन का दिल धड़कता हुआ महसूस होता है उन्हों ने मुततिद तारीखी नज़्में भी फिकर फरमाई हैं और वह भी सब की सब हुबुलवतनी ही के रंग में डूबी हुई हैं उन्हें पढ़ कर कारी के दिल में भी वही जोश और वलवला पैदा हो जाता है। जिस जोश और वलवले के साथ वे लिखो गई हैं। वैहशी साहिब किसी बात को जिस तरह महसूस करते हैं उसे हूबहू उसी तरह इश्आर के कालब में ढाल देते हैं और वे पन्जाबी ज़बान के बहुत से दीगर शोरा की तरह महज़ काफिया पेमाई को मैराजे शायरी ख्याल नहीं करते। उन की तबीय्यत का यही वसफ उन्हें अपने हम उमर शोरा में एक मुम्ताज़ दर्जा अता करता है। उन का क्लाम जहां हुसने बातनी की दौलत से मालामाल है वहां वह हुसने ज़ाहिरी का एक जाज़ब नज़र मुरक्का भी है उन का अंदाज़े ब्यान बहुत वाज़िया पुर जिद्दत और सरापाकशश है वह इज़हारे ज़ज़्बात के लिए जो ज़बान

इस्तेमाल करते हैं वह टैक्साली और बामुहावरा होने के इलावा बिल्कुल आम फहम और मुनासिब हाल होती है उन का सारा क्लाम पढ़ जाईये आप को किसी जगह इव्हाम, इहमाल या पचीदा ब्यानी का शायबा तक नज़र न आयेगा।

मकामे मुस्सरत है कि वैहशी साहिब ने अपने बेशमार मद्दाहों जिन में राकम उलहरूफ भी शामिल है के असरारे बलीग का पास करते हुए अपना सहर आफरी क्लाम एक मजमूए की शकल में शाया करना मनज़ूर फर्मा लिया है मुझे उमीद है कि उन का यह मजमूआ पञ्जाबी ज़बान के शेएरों अदब में एक ग्रांकदर अज़ाफा साबत होगा और इसे वही मकबूलीयत हासिल होगी जिस का यह बजा तौर पर मुस्तहक है। फकत !

न्याज़केश :—

जालन्धर
3-11-60

ब्रह्मदत्त 'हुमाहरनालवी'

उर्दू ज़बान दे मशहूर कवि मौलाना अलताफ हुसैन साहिब हाली ने किहया सोहना शेर किहा ए ।

ऐ शेएर दिलफ़रेब न हो तू तो ग़म नहीं ।

पर तुझ पै हैफ़ है जो न हो दिलगुदाज़ तू ।

चंगे ते सोहणे शेर दो वडियाई मौलाना साहिब ने बड़े सोहने ढंग नाल कीती ए । मैं पंजाबी साहित्य दियाँ बहुत सारियां किताबां पढ़ियां ने कोई विरली कविता ई एस मय्यार ते पूरी उतरदी ए । किसे कविता विच इक कमी ते किसे विच दूजी कमी मिलदी ए । एह मेरी चरोकनी चाह सी कि मैं पंजाबी कविता नाल प्यार करन वालयाँ दी खिदमत विच सही पंजाबी कविता पेश करां ते एहो ई लग्न मैनूँ अपने उस्ताद 'वैहशी' जी दे चरणां विच लै गई । वड़े तकाज़यां दे नाल मैं उन्हाँ दियां कवितावाँ विचवों थोड़े जिहे अनमोल मोती हासिल करन विच कामयाब होया वां आप एहनु इक मामूली शागिर्द दी अपने उस्ताद दो वडियाई न समझयो जे । मेरी एस गल्ल दी ताईद उर्दू ते पंजाबी दे मशहूर कवियाँ जनाब ब्रह्म दत्त साहिब हुमाहरनालवी, मान्नीय योग उस्ताद बरकत राम जी 'युमन' ते जस्वन्त राये जी 'राय' दे एस किताब दे मुतल्लिक लिखयाँ होयां दिवाचयां तों हुन्दी ए ।

हत्थ कंगन नूं आर्सी कीह, किताब दा कोई वर्का थुल्लो ते पढ़ो तुसी अपने आप उस्ताद होराँ दी वडियाई कीते बगैर नहीं रह सकदे जिदाँ :—

जो अच्छा शेएर होता है सुखन वर बोल उठते हैं ।

एह लिखन नाल मेरा मतलब दूजे लिखन वालयां दी निरादरी करना नहीं : चंगे कवि काफ़िये ते रदीफ दो बन्दश वल ते कविता

नाल प्यार करन वाले मज़बून दी बन्दश ते रुवानी वल खास ध्यान रखदे ने इक जगह उस्ताद होरां हिन्दुस्तान दी शान ते गद्दारां दी गद्दारी नूं मुख रखदयां होयाँ एदां फर्माया ए।

सौं रब दी वड्डे सिकन्दरां दे
जंग विच साडी तलवारां ने फुल चुन लये।
जेहड़े छातियां तान के आये ऐथे
ओहनाँ शाहसवारां दे फुल चुन लये।
असीं गैरां नूं बोचिया फुल वांगू
साडे घर दियां खारां ने फुल चुन लये।
भारतवर्ष दे नामियां योद्धयां दे
ऐहनां क़ौमी गद्दारां ने फुल चुन लये।
चीर दिता गद्दारां ने दिल साडा
चीरा दे के देख लौ चीर लक्खां।
आऊंदे याद ने जदों गद्दार पापी
वजदे विच कलेजे दे तीर लखां।

वीर रस उन्हां दा अपना रस ए। पर मैं ते कहवांगा कि उन्हां दे वीर रसदे शेएर सुन के डरपोक तों डरपोक बन्दा वी देश दी शान नुं कायम रखन वास्ते हत्थां विच तलवार लैके मरन मारन ते तुल जांदा ए। ओह कौन एं जिदा एह शेएर सुन के खून नहीं खोल जावे। मिर्ज़े. दी ज़मीन विच एदां फर्मांदे ने।

कोई टप नहीं सकदा भुल के जेहड़ी लीक दियाँ मै लीक।
मैं घड़ घड़ धौनाँ केर दां मैनूं दित्ती रब्ब तोफीक;
मैं रत्त वैरी दी दोस्ता पी जां लाके डीक।
मैं परवाना मौत दा मेरा दाईया कबरां तीक।
मेरे हत्थां ओहले बिजलियां मेरे डौलयाँ विच तूफान।

मैं वाली हिन्दुस्तान दा एह मेरा हिन्दुस्तान।

वैंत ते पंजाबी साहित्य विच कवि लोक मुदतां तों कहिंदे आये ने ते पंजाबी दे कवि पंजाब दे हर कोने विच मिलदे ने। माता दियां भेंटाँ कहन वाले वी कवि हैन ते रामायण महाभारत नूं कविता दी शकल देन वाले वी कवि ने पर देखना एं कि ओह कौन ऐ जिदा हर शेएर कविता दे मैदान विच इलहाम होवे। जिस तरहां सय्यद वारिस शाह ने हीर कही ए, फज़ल शाह ने सोहनी, बुल्हे शाह ने काफियां, बावे फरीद ने श्लोक, हाशम ने सस्सी, पीलू ने मिर्ज़ा, कालीदास ने पूरण, ते उस्ताद बरकत राम 'युमन' होरां गज़लां इन्हां गिने मिने कवियाँ विच अपने उस्ताद होरां दा नां लैनां शागिर्दी दा हक अदा करना नहीं बल्कि हकीकत ए उस्ताद साहिब ने जिस मज़मून ते कलम चुक्की ओसे मज़मून विच रंगे गये। पंजाबी कवि अज कल गज़लां बड़े शौक नाल कहिंदे ने हालाँकि उन्हां दियां गज़लां ९9 फी सदी उर्दू गज़लाँ दा तरजमां हुन्दियां ने पर उस्ताद होरां दे एह शेएर पढ़ के तुसीं एस ग़ल्ल तों मुनकर हो जाओगे ते एह गल्ल कहन ते मजबूर हो जाओगे!

अभी कुछ लोग बाकी हैं जहां में।

मतला—एह झूठी कहानी बनाई गई ए।
प्याराँ दी तोहमत लगाई गई ए।
ओहदे शोख नैनां ते तोहमत नहीं लाँदा।
मैं पीती नही पर पिलाई गई ए।

(2)

नज़र दे तीर खादे ने मैनुं आराम की होवे।
सुबह तों हिचकियां लैनां पता नहीं शाम कीह होवे।

जिन्हां बरबाद कर दिता रकीबां नूं ओह कहिंदे ने ।
किसे बदनाम दी खातिर कोई बदनाम कीह होवे ।

एह गल्ल करदयाँ हासा वी आऊंदा ए ते कई अपने आप बने होए कवियां दा पोल वी खुलदा ए । तुसाँ पब्लिसिटी ते आकाश बाणी दे कवि सम्मेलनां विच कई वार कवितावां सुनियां होनगियाँ । नेशनल प्लैनिंग दे सिलसिले विच हर इक कवि ने अपने सिर तों भार लाऊन दी कोशिश कीती ए, पर उस्ताद साहिब ने जदों वी ते जो कुझ वी किहया बड़ी ज़िम्मेवारी ते जोर नाल किहा जिस तरहाँ :—

मेहनत कीती खूब किसानां ढिल्ले हो गये काल दे पंजे ।
नाल बूटयां गये शिंगारे पर्बत सन जो कल तक गंजे ।
सड़कां दे एन्ज जाल विछे ने जिदां कोई बुन देंदा मन्जे ।
इन्ज नहराँ तों सूए तुरदे ज्यों तुरदे ने जांजी जन्जे ।

उर्दू विच रुबाई ते पंजाबी विच चौकलियाँ कहना अंजानयाँ दी खेढ नहीं । चौकलीया जां रुबाई ओदों ई कामयाब हुन्दी ए जदों आखीरी मिसरा वज़नदार बामैनी ते पहले मिसरयां तों भारा होवे उस्ताद साहिब दे हर चौकलिए विच एह सब चीज़ां तुहानूँ मिलनगियां जिस तरहां :—

हेरा फेरी स्यासत दा नां दूजा, एथे पैंदे शराफत नूं ठुडे ई रहे ।
एथे शाहसवारां नूं मात देंदे, लूल्हे लंगे नकारे ते डुडे ई रहे ।
मौजाँ मानदे रहे नादान एथे, दान्ने एस थाँ लग्गे दे खुडे ई रहे ।
चौधर रही ज़माने ते वैहशियां दी, होश वालयां दे होश उडे ई रहे ।

भांत भांत दियां बोलयां बोलदे ने, सदा तुरतुरी कढ ज़बान तोते ।
ओहवी वक्त ते चौधरी बन जाँदे, जिन्हाँ बुज़दिलां दे उड जान तोते ।
राखे नाल गुलेल दे करन राखा, फल पक्के ते आनके खान तोते ।

ऐपर मालियां दी किस्मत विच लिखया, सारी उमर उह पये उड़ान तोते

(3)

एनां कौमो गद्दारां ने पाए हरदम, साडियां बेड़ियां विच बेशमार वटे।
पिठू गैर दा बन के दगेबाज़ां, लाये कौम नूं कई हज़ार वटे।
साडे सिरां दे मुल जहान उत्ते, एहनां मूज़ियाँ ने लक्खां वार वटे।
बदले रंग ज़माने ने कई वारी, पर न वैहशिया कौमी गद्दार वटे।

चौकलिए दा ते कीह कहना वैहशी साहिब ने कई ऐसे मिसरे कहे ने जेहड़े कईयां दीवानां ते भारू ने।

असां गैराँ नूँ बोचया फुल वांगूं,
साडे घर दियां खारां ने फुल चुन लये।
अदला बदली संसार दे हैन चक्कर,
चक्कर विच संसार ने सदा रहना।
जेहड़ा जित के दुनियां नूं जूत मारे,
ओहदे गल विच पांदी ए हार दुनियाँ।

मैं आप जी दे ते उस्ताद साहिब दी कवितावां विचकार ज्यादा देर नहीं रहना चांहदा। मेरा ख्याल ए कि आप किताब पढ़न दे बाद ग़ालिब साहिब दे शेएर नूँ एदां पढ़न ते मजबूर हो जाओगे।

हैं और भी दुनियां में सुखन वर बहुत अच्छे,
कहते हैं कि वैहशी का है अंदाजे ब्यां और।

तुहाडा दास

बन्सी लाल 'सागर' पठानकोटी।

कुझ गल्लां अजेहियां हुन्दियां ने कि उन्हां नूं टालना अपने वस दा रोग नहीं हुँदा। कुझ दिनां तों कुझ एहो जेही इक गल नाल मेरा वास्ता पया। मेरा इशारा मेरे अज़ीज़ शागर्द बन्सी लाल 'सागर' पठानकोटी दी ऐस ज़िद वल्ल ए जिदी वजा करके मैनूं अपनियां कवितावां अजीज़ दे हवाले करनियां पईयां ते एह कवितावाँ मेरे अज़ीज़ दी अपनी पसंद दीं चोन एं।

जे एस किताब दी रचना दा सेहरा अज़ीज़ बन्सी लाल 'सागर' दे सिर है ते मेरी कविता मेरे मान्य योग उस्ताद श्री बरकत राम जी 'युमन' बटालवी दी आर्शीवाद दा नतीजा ए।

पुरशोतम लाल "वैहशी"
पठानकोट।



पुरशोतम लाल "वैहशी" पठानकोटी ।

असां वेखना रूए ज़मीन उत्ते, साडी आनके कौन उछालदा पग ।
असां वेखना डन्के दी चोट लाके, साडे लहू नाल कौन हंगालदा पग ।
नाले वेखना काल दे सिर उत्ते, केहड़ा बन्ह के भला वखालदा पग ;
जदों भंगड़ा मौत ने आन पाया, असां वेखना कौन सम्भालदा पग ।
भगतसिंह दी रूह पई आखदी ए, अजे तीक नहीं सुकया दार दा ख़ून ।

विषय सूची

भारत मां

धन धन वें तूं भारत मैया तेथों सदके जावां मां।
पाके पुत शहीदो तेरे अमर बना गए नाँवां मां।
कर गया मंगल, मंगल पांडे गीत ओसदे गावां मां।
कित्थे तांतिया नाना झांसी वाजां मार बुलावा मां।
काश बहादुर शाह अज होवे चरणी सीस नवावा मां।
क्यों न चुम चुम मिट्टी तेरी मत्थे दे नाल लावां मां।

————

तूं होनी दी भेटा खातिर जदकद सिर सन मंगे मां।
इतिहास तेरे दे खूनी वरके तेरे पुत्रां रंगे मां।
मौत दे वेहड़े लुड्डी पानों पुत तेरे न संगे मां।
भुजदे आए ने धानां वांगू तेरे पुत पतंगे मां!
तेरे पुत्रां लहू विच नहाके लाहियां गलों बलावाँ मां।
क्यों न चुम २ मिट्टी तेरी मत्थे दे नाल लावां माँ।

————

डांगां खाके लाजपत दे निकले आके जदों प्राण।
फूड़ी तक के वेहड़े तेरे पागल हो गए शेर जवान।
ज्या उछाला लहू ने खादा लग़ी जवानी वड २ खान।
खपफन बन के सिरदे उते नितरे मर्द मैदानी आन।
एस जीवन तों मरना चंगा लईयां तोल भुजावां मां।
क्यों न चुम २ मिट्टी तेरी मत्थे दे नाल लावां मां।

————

वांग अंगारे भखी जवानी अन्ख आन दे वज्जे ढोल।
हरि किशन ते शेरजंग ने दिती इक हनेरी झोल।

भगतसिंह ने मारके वाजां मौत बुला लई अपने कोल ।
चन्द्र शेखर फरंगी वाले सिदे दिते घग्गर खोल ।
चुड़ २ मर गया भुक्खां सेती किदां दास भुलावां मां
क्यों न चुम २ मिट्टी तेरी मत्थे दे नाल लावां मां

————

आया सी जेडा जल्यांवाले भुल नहीं सकदा कदे भुचाल।
भुन्ने धानां वांगू हिन्दी गोरे, हो के लालो लाल ।
तेरे पुत्रां ओस घड़ी वी दिती अपनी अनख वखाल ।
ऊधमसिंह ने विच वलायते डायर भुनिया गोली नाल ।
सांवें मौत बहाके ओहने बदला लाहिया सांवां मां।
क्यों न चुम चुम मिट्टी तेरी मत्थे दे नाल लावां मां।

————

कींवें भुल्ले तैनूं तेरा अथरा पुत बंगाली शेर ।
ज़ुलम, तशदद, बन्दीखाना कर न सकया जिन्हूं ज़ेर ।
किस्मत तेरीदा जिस योधे,बिल्कुल दित्ता चक्कर फेर ।
अमफल उत्ते सीस हजारां धड़ तों दिते जिन्ने केर ।
वज वजाके कहिंदा आया सिर ते छत्तर भुलावां मां।
क्यों न चुम २ मिट्टी तेरी मत्थे दे नाल लावां मां।
तेरे वरगे पुत अनखीले जम्मन विच ज़माने मां ।

————

दब्बे गए ने खफ्फन वाहजूं किथे देस दीवाने मां ।
पूजां उन्हां शहीदां ताईं लभदा फिरां वैराने माँ ।
न कोई बुत्त ते कबरां बनीयां रहगए निरे फसाने मां ।
रमज़ां नाल हकूमत ताईं गल्लां अज समझावां मां ।
क्यों न चुम २ मिट्टी तेरी मत्थे दे नाल लावां मां ।

———=

(1)

खून

भारत माँ मैं जां कुर्बान तेथों, मेरीयां रगां अंदर जोश मारदा खून।
तेरे वल जे घूरिया किसे पापी, फोरन खोल जाऊ सेवादार दा खून।
तेरा नां शहीदां ने अमर कीता तेरी कौम नूं पया शृगांरदा खून।
भारत रहेगा सदा आज़ाद मेरा, बापू गांधी दा पया पुकारदा खून।
जद तक रगां दे विच ए खून साडे, हो नहीं सकदा देश प्यार दा खून।
कीता किसे गद्दार जे कदे धोखा, पी लवांगे ओस गद्दार दा खून।

(2)

सीस कट के धरे ने तली उते, अपनी तेग दा वेग अज़मान बदले।
चमकी तेगते चमकेगा वीर हिन्दा भारत माँ दी शान चमकान बदले।
ऊधम सिंह ने लंदन दे विच दसिया किदां लैंदे ने मर्द मैदान बदले।
जदों होवेगी पर्ख पर्वानिया दी, तदों लवेगा हिन्दी जवान बदले।
सानूँ दसिया देश दिवानेयां ने, जज़्बे कोम दे सदा उभारदा खून।
कीता किसे......

(3)

असां वेखना रूए ज़मीन उते, साडी आनके कौन उछालदा पग।
असां वेखना डन्के दी चोट लाके, साडे लहू नाल कौन हंगालदा पग।
नाले वेखना काल दे सिर उते, केहड़ा बन्ह के भला वखालदा पग।
जदों भंगड़ा मौत ने आन पाया, असां वेखना कौन सम्भालदा पग।
भगतसिंह दी रूह पई आखदी ए, अजे तीक नहीं सुकया दार दा खून।
कीता किसे......

(4)

आओ २ खिडारीयो आओ खेडो असां खेडनी ए हुन ते सिरां दी खेड!
बाज़ी सिरां दी सिरां ते मुक जावे लगी होईए जेहड़ी ए चिरांदी खेड।

आओ ढोल वजाके पर्व लईये एथे मुक जावे सभनां धिरां दी खेड
एह तें केडनी सिरां दे नाल पैनी ए कोई खेड नहीं बाज़ीगरां दी खेड
अस नचिये मौत दी जूह अंदर अम्फल विच ए पिया वंगारदा खून
कीता किसे......

(5)

असां नचना तेग दी धार उते जिन्ने वेखना वेख लये यारां दा नाच
बन्ह लये ने मौत दे असां गाने कर के दसांगे हुन तलवारां दा नाच
वक्त आयेगा तेग दी धार उते दुनियां वेखेगी लत्थे लंगारां दा नाच
आखर होवेगा एस संसार अंदर ऐटम वालियो आन अंगारां दा नाच
बड़ा मान ऐ 'वैहशी' नूं डौलियांते अनख आन नूँ आखर नतारदा खून
कीता किसे......

अमर शहीद ऊधम सिंह

(1)

दूल्हे शेर पंजाब दे तेरी बड़ी निराली शान।
धाकां पा गए जग ते तेरे अलहड़ बाल नादान।
ढोले गावन काल दे जद तेगां गिदे पान।
तूं ढुक्कें वेहड़े मौत दे तली टिका के जान।
तेरों हिम्मत नूँ पए पूजदे धरती अते असमान।
तेरी हिक हिमाल सोहनया तेरे डौले निरे तूफान।

(2)

तेंरे शेर रंजीत दा गूञ्जे जग ते नाम।
जिनुं झुक अंग्रेज़ वी करदे रहे सलाम।
कल दी गल सोहनया होई गद्दारी आम।
धोखे, मकर फ़रेब थीं हो गया देश गुलाम।
भाड़ा सिंह गद्दार ने कीता नां बदनाम।
मूल राज ते शाम सिंह मर गए मौत हराम।

(3)

खाधी नाल पंजाबियां खूब फरंगी खार।
होली खेढी खून दी खून तेग उलार।
दिता कंवर दलीप नूं विच प्रदेसां मार।
जिंदा मर गई पिटदी ढांवां मार हज़ार।
रंगे गये फिर लहू थीं थां थां गली बाज़ार।
अन्नी पै गई आन के विच पंजाबे यार।

(4)

फिर आज़ादी वालड़ा आया इक तूफान ।
इनकलाबी दौर दे लग्गे नारे आन ।
बीड़ के तोपां आ गया एडवायर शैतान ।
भुज्जे धानां बांगरां अलहड़ बाल नादान ।
अबला एदाँ कूकीयां कूञ्जां ज्यों कुरलान ।
जलयांवाला बाग़ नूं कर दिता शमशान ।

(5)

कीते जुलम अंग्रेज़ ने साडे नाल कनाल ।
ढिड्डां भार ई तोरया सानूं हैंटर मार ।
झुन्ड मांवां दे चुक के सौ सौ कढो गाल ।
धक धक काले पानीयां मिट्टी दित्ती बाल
उधम सिंह जद वेखया सब कुछ अखां नाल ।
ओहदे दिल विच आनके उठिया इक उबाल ।

(6)

विच तसव्वर आ गई भारत दी तसवीर ।
पैरीं पए सन छनकदे छन २ सख्त ज़ंजीर ।
छल छल पए सन छलकदे अखां विचों नीर ।
रोंदी पुब्बां मार के हो गई अज आखीर ।
ऊधम सिंह ने आखया न हो मां दिलगीर ।
तेरी खातिर मरनगे तेरे पुत रंधीर ।

(7)

तक न सकिया देश दा ऐना ओह अपमान ।
अनखी दिल विच अनखदे उठे आन तूफान ।

हो गया सिद्धा सूरमा तली टिका के जान।
अनख ड्रामा लीकिया खूनी रख अनवान।
दिल विच अग्गां भड़कीयाँ नच उठे अरमान।
दाग गुलावी धोन नूं तुर पया छाती तान।

(8)

सिर ते कफ्फन बन्ह के बन गया अग दी नाल।
सन् 31 विच ओस ने वाह वाह खेडी चाल।
राम मुहम्मद सिंह नाँ बदलिया ओस कमाल।
गया अमरीका विच ओह मार स्यासी छाल।
वापिस आऊंदा फड़ लिया ओह पस्तौलाँ नाल।
कैंदी सैंट्रल जेल दा हो गया हिन्दी लाल।

(9)

ओथे रज रज वैरीयाँ कीते जुलम कमाल।
गया शकंजे जकड़या ओह भारत दा लाल।
पुट्ठा कर के टंगया ओहनूँ छत दे नाल।
बर्फां हेठाँ दब के कीता गया निढाल।
पा पा डंडे बेड़ीयाँ कीता हाल बेहाल।
ताँ वी मर्द न डोलया डर के रत्ती रवाल।

(10)

आखर सैंटरल जेल चों होई रिहाई आन।
पुज़्जा विच पुरन्दरीं योद्धा छाती तान।
लै गए ठलीं ठिल के ओहनूँ दिली तूफान।
पुज गया लंदन विच ओह हिन्दी शेर जवान।
काराँ विच ओह बैठके काराँ लगा घुमान।
भेस नवाबी बदल के लगा क्लबीं जान।

(11)

लंदन विच क्लब सी इक फौजी बे नज़ीर।
सन् 40, 13 मार्च नूँ जलसा होया वीर।
डायिर छाती तान के करन लगा तकरीर।
कढिया पस्तौल नूँ ऊधम सिंह रंधीर।
पहली गोली ठोकवीं गई कलेजा चीर।
दूजी पई ज़ैडलैंड नूं बच प्या वेपीर।

(12)

सुट के फिर पस्तौल नूँ ग्राप होया ग्रिफ़तार।
कहन लगा अफ़सोस ए बच गया इक मुर्दार।
रब्बा विच पंजाब दे जम्माँ दूजी वार।
पूरा कर्ज़ा कौम दा सकिया नहीं उतार।
सन् चाली 31 जून नूँ ऊधम सिंह सरदार।
नच के चढ़या दार ते 'वैहशी' छालाँ मार।

———

सावन

(1)

धक्का देके शौ दे अंदर तुर दूर प्यारे सावन,
ला गये फेर उडाराँ जद तों सुन्ने रोन चुबारे सावन,
दिल मेरे दियां लीराँ करके लाहयाँ कोई लंगारे सावन,
लल्लाँ लै के वक्त गुज़ाराँ प्रीतम ला गया लारे सावन,
हड़ी जवानी ठाठाँ मारे चले टुट किनारे सावन।
दिल विच मेरे बलन मुआते जा पापी हत्यारे सावन॥

(2)

जानी २ मैं कुरलावाँ जद तों आया जानी जोवन,
हो गई अज जवानी अन्नी विच जवानी आया जोवन,
पागल होई जवानी मेरी कर गया प्रेम दीवानी जोबन,
विच तूफानाँ गोते खाँदा मेरा अज तूफानी जोबन,
रंग बरंगयाँ पींघाँ पाके न दे इश्क हुलारे सावन।
दिल विच मेरे बलन मुआते जा पापी हत्यारे सावन॥

(3)

जोबन आन भुलाया मैनूँ रस्ते पै गए टेडे नैन,
मस्ती दे विच अन्ने होके खेढ प्रेम दी केढे नैन,
छल छल कर के छले गए ने मेरे शोख छलेडे नैन,
अज किसे दीयाँ यादाँ अंदर खाँदे फिरदे ठेडे नैन,
मोई होई नूँ मार गये ने तेरे मस्त नज़ारे सावन।
दिल विच मेरे बलन मुआते जा पापी हत्यारे सावन॥

(4)

कीले कौन सपेरे वाजूँ नाग जुलफ दे काल बने ने,
काली रात हनेरे डस्सन काले फिनियर बाल बने ने,
दिल दा पंछी फड़ फड़ फड़के पेच जुलफ दे जाल बने ने,
हो गई जुलफ आवारा मेरी जद तों मंदे हाल बने ने ।
उस प्रदेसी प्रीतम बाहजूं जुलफ़ां कौन संवारे सावन
दिल विच मेरे बलन मुआते जा पापी हत्यारे सावन।

(5)

रब्बा रुत सुहानी अन्दर प्रीतम न प्रदेसी होवे ।
बदलां दे विच बिजली चमके कमला दिल न रत्ती होवे ।
नैन नशीले टपकन हरदम अथरू बन बन कजला चोवे ।
बुल्लाँ दे विच हौके तड़फन तलियाँ उत्ते मह्दिी रोवे ।
बिजली नाल चढ़ा के पींघाँ न कर प्रेम इशारे सावन।
दिल विच मेरे वलन मुआते जा पापी हत्यारे सावन ॥

(6)

पिपलाँ उत्ते पींघा पाके झूटन जद चकराटाँ अड़या ।
डुल२ जाए जवानी मेरी दिल विच पैन तराटाँ अड़या ।
बल बल उठन सीने राहीं नैनाँ दे विच लाटाँ अड़या ।
भुल भुलेखे आ प्रदेसी वाटां हरदम वाटाँ अड़या ।
पानी दी थां अम्बर उत्तों रज-रज सुट अँगारे सावन ।
दिल विच मेरे बलन मुआते जा पापी हत्यारे सावन ॥

— · — —

(1)

मैं भारत दा पुत अनखेला भारत माँ ए मेरी मां,
हरदम करना पूजा एहदी हरदम एहदे सोहले गाँ,
एहने मैनूं लाड लडाए मैं एहदे तों सदके जां,
हरदम दिल विच आशा एहो एहदे लई कुर्बानी दां,
वारन इसतों जिंद जवानी खौफ कदे न मौतों खाँ।
मैं मिट जावाँ लक्खां वारी मिटे न मेरे देश दा नाँ।।

(2)

विच मैदाने वैरी साँवें हमले करना जदों जवाबी,
मेरीयां अखां दे विच डोरे पै जाँदे ने लाल गुलाबी,
तेग मेरी दी वेख रवानी हो जांदो ए मौत शराबी,
भारत वल कोई तक नहीं सकदा जदतक जीऊंदा शेर पंजाबो,
लखाँ वारी जग दे अंदर मैं कीती तेगां दी शां।
मैं मिट जावाँ......

(3)

एहदी खातिर कष्ट हज़ाराँ जरने पये ते जरने मैं,
एहदी खातिर खूनी सागर तरने पये ते तरने मैं,
एहदी अनख नतारन खातिर अनख नतारे करने मैं,
तलीयां उते सीस टका के एहदे तरने मरने मैं,
सिर दा जुआ खेडन सिखिया दा ते सदा जवानी लां।
मैं मिट ज़ावां......

(4)

भारत मां दे पुत अनखीले जंगी पये तराने गौन,
भा मौत दा पुच्छन वाले कफ्फन बन्ह के सांवें औन,
देश मेरे वल तक्के केहड़ा जद तक धड़ दे उते धौन,
तेग मेरी ने वेखे भाले 'वैहशी' नूं ललकारे कौन,

साडे नाल जो लावे आडे केहड़ा जमया। रानी खाँ
मैं मिट जावां......

———

आज़ादी

(1)

सदियाँ बाद आज़ादीए आई एं तूं क्यों न खुशी दे होन सामान लखां।
तेरे दम बदले की तूं जानदी नहीं मेरे देश विच आए तूफान लखाँ।
पर्ख जदों वी होई परवानेयां दी नितरे तली ते रख के जान लखां।
गाने बन्ह के आन ते वान वाले घोड़ी अनख दी चढ़े जवान लखां।
लदगये सहकदे तेरे वियोग अंदर दिलविच लैके दिली अरमान लखां।
तेरी दीद खातिर भागां वालीए नी मर गये तडफदे मर्द मैदान लखाँ।

(2)

अड़ीये तेरयां आशकाँ सादकां ते की २ जुलम न एहनां ने तोड़या सी।
जिस लब ते तेरा वी नां आया ओहनूं नाल संगीन भंजोड़या सी।
पुट्ठा टंग के हिन्दी नूं बूटेयां ते किल ठोक के लहू नचोड़या सी।
कोड़े, गोलियां, डांगां, ज़बानबन्दी काले पानीयाँ दे विच होड़या सी।
कीती जुलम दी हद फिर पापीयाँ ने टंगे नेज़ियाँ उते नादान लखां।
तेरी दीद खातिर......

(3)

आ अजते ओहनाँ याद करिये जिन्हां लहू नाल खेलियाँ होलियां सन।
शेर मर्दां जवानी दी रुत अन्दर रत्तां तेरे प्यार लई डोलीयाँ सन।
सड़न वास्ते जुलम दी शमां उते वनियां वांग पर्वानियां टोलीयां सन।
तेरे नां तो जान कुर्बान करके पाईयां नचके दारां ते बोलीयाँ सन।
ज़रा विच तसव्वर दे मार झाती तेरी याद विच लुडीयाँ पान लखाँ।
तेरी दीद खातिर ...

(4)

भुल नहीं सकदा किते सुलतानटीपू अलीवरदी या ओहदे सुराजदा दिल
शाम सिंह अटारी दा क्यों भुल्बे किवें भुल सकदा मूलराज दा दिल
नाना, ज़फर ते लक्ष्मी आए चेते किन नहीं वेखया तांतलेबाज दा दिल

जदतक रहेगा ज़मीं असमान कायम चेते रहेगा तिलकमहाराजदा दिल
लाजपत, अज़ीत, ते दास सूफी लद गए अपने लहू दा पान लखां।
तेरी दीद खातिर......

(5)

नचदे दारां ते लभन अशफाक-बिसमिल,
चंद्रशेखर वी आऊंदा अज़ाद चेते।
राजगुरू सुखदेव दे नाल हरदम,
भगत सिंह वी ओहदी ए याद चेते।
जदों भगवती चरण दा नां लैना,
आऊंदा दास वी खाना बरबाद चेते।
जलयांवाला तसव्वर च नचदा ए,
आऊंदा जदों एडवायर जल्लाद चेते।
ऊधमसिंह नहीं कोई वी जम सकदा,
भावें दुनियां ते जमन इनसान लखां।
तेरी दीद खातिर......

(6)

तेनूँ याद वे भारत दी गोदं अंदर इक वक्त ते खेडदे लाल सन दो।
इक गांधी ते दूजा सुभाष बाबू अपनी शान दे मर्द कमाल सन दो।
इक तूफान दूजा सोमां शान्ति दा मंज़िल इको ते ऐपर ख्याल सन दो।
मेटन वास्ते खुरा फरंगीयां दा इको धरती तों उठे भुचाल सन दो।
योधे नच पये दोहां इशारयाँ ते तेरी शान तों होए कुर्बान लखाँ।
तेरी दीद खातिर......

(7)

खाके कसम शहीदां दी कहन हिन्दी,
तेरी शान खातिर जीयाँ मरांगे हुन।

सिर तली ते रख के शौक सेती,
सागर अनख ते आन दे तरांगे हुन ।
तेरी जग ते शान चमकान खातिर,
सेवा खफ्फन लपेट के करांगे हुन ।
तेरी मंग ते मर्द मैदान बन के;
हस हस शहीदीय वराँगे हुन ।
हिम्मत दे खां होर इरादियां नूँ,
अखां अगे ने साडे निशान लखाँ ।
तेरी दीद खातिर......

— — -- —

अखाड़ी वंग

(1)

आया माह वैसाख दा गर्मी पई कहर ।
जोबन विच सी कड़कदी सिर ते सिकल दोपह्र ।
चलो वसाखो वेखिए मन विच आ गई लह्र ।
थाँ थां वजदे भंगड़े कुंगरु पैरों पैर ।
बांलो माहीया बबलियां पये अलापन मह्र ।
वजे पी पी बोतलां पैर न सकन ठह्र ।

(2)

सद्दाँ पिड़ विच मार के किसे लाई लम्बी तान ।
जुग जुग जीयो खाँ बलिए होर जवानी मान ।
जग दे अन्दर बलयां हान हान प्रमाण ।
पम्वट वांग पवांटरे लगे शराबी खान ।
सद्दा अधा रह गया डांग च खड़की आन ।
पाजड़ पै गई आन के बड़ी प्यारी जान ।

(3)

पिड़ चों नसना पै गया जान बचा के यार ।
ठेंडा वजा आन के डिग पया मुंह दे भार ।
चुभ गई चूड़ी कच दी मत्थे दे विचकार ।
मूंह चों गालां निकलियां जद ओह्दी वज्जी धार ।
कच दीए कचीए चूड़िए तेनूँ वग जाए रव दी मार ।
चूड़ी बोली बोल ए न कविया झल खलार ।

(4)

वे तूँ की मेरा वेखया तूं की की जाने सार।
जिदी बांह वि च सां मैं छलकदी ओो सी देवी नार।
जिदा जोबन ठाठां मारदा अलबेली सी मुटयार।
दिल सन लखां डोलदे सुन वंगां दी छंकार।
वे वेहले वेले ओस नूं घड़िया सी करतार।
ओहदो सद्दर भड़ता होगई ओहनूँ खागया देश प्यार।

(5)

ऐ कल दी गल नहीं सोहना गुज़रे ने कई साल।
जद जग ते है सा चमकदा गौरे दा इकबाल।
जद अत्ताँ ओहने कीतियां तद आया इक भूचाँल।
रज रज हिन्दी ओस ने भुने गोली नाल।
भारत मां दी अनख ने खाधा इक उबाल।
नितरे खफ्फन बन्ह के भारत मां दे लाल।

(6)

फिर आकी हो गई आन के भारत दी सन्तान।
मर्द मैदानी लग पये सिर दे बाज़े लान।
दारां उत्ते नच के चढ़ गये शेर जवान।
अज तक चेते असां नूँ गांधी दा फरमान।
खाली करदे गोरया साडा हिन्दुस्तान।
अज वी साडी वीरता सतलूज करे बयान।

(7)

रहगई तिलक महाराज दी दिल दी दिल विच आस।
मरना लजपत शेर दा आ गया सानूं रास।

भुखां सेती मर गया चुड़ चुड़ सोहना दास।
गजया वीर सुभाष सी कर के वैरी नास।
भारत रह नहीं सकदी हुन अंग्रेजां पास।
अलहड़ इस मुटयार ने तद जेलों का:ता वास।

(8)

जद हिन्दी सिधा हो गया तली टिका के जान।
फिर वंडीयां पाके तुर गया ओह अंग्रेज शैतान।
फिर फिरकू नाग कुरुन्डोये लग़े भड़थू पान।
डांगां छवियां खड़कियां थां थां उते आन।
तड़ २ चलियां गोलियां गये भुन्ने बाल नादान।
फिर अबला एदाँ कूकियां कूंजां ज्यों कुरलान।

(9)

जद मज़बां बेड़ा डोबिया मरगई आप खमीर।
इज़्ज़त मेरे देश दी हो गई लीरो लीर।
इज़्ज़त पिंड दी भैन दी लुटन लग पये वीर।
कई मोईयां छालां मारके लभ लभ डूंघे नीर।
कईयां पत बचान नूँ फूके सोहल शरीर।
मर गईयां सतवंतियां मौरा खा आखीर।

(10)

भाजड़ पै गई आन के जद पै गई मारोमार।
एह वी टब्बर निकलिया छडके घर सरकार।
राह विच छवीयां वालड़े आ गये बेशमार।
घेरा पाके पापियां वढ दित्ता परिवार।
कल्ली सदका हुसन दा बच गई एह मुटियार।
लै गये एहनूं जीप ते धर्म दे ठेकेदार।

(11)

एह हरनी नीलीवार दी फस गई विच जंजाल ।
हर इक एहो आखदा तूं चलना मेरे नाल ।
उस वेले ओहदी अनख ने खादा इक उबाल ।
तां हमला ओहने मारके जीपों मारी छाल ।
होगई देवी अमर ओह ओहनूं चुकके लैगया काल ।
मै वंग आँ कवीया ओस दी लहू विच भिजी आन ।

(12)

सुन २ वंग दे कीरने मेरे दिल विच उठी हूक ।
मेरे पैरों मिट्टी निकल गई रंग होया पीला फूक ।
उस वंगचों शोला निकलया जिन तनमन दिता फूक ।
मोई आजादी भाल दी अलहड़ नार मलूक ।
जो जो कीता फिरकुआं आया याद सलूक ।
मरगई कूकां मारदी ओहदी किसे न सुनी कूक ।

———

सुभाष

(1)

आजा पुत सुभाष मेरया भारत कहिंदो तरले पा।
कर गयाँ मैंनूं झल वलाली हरदम पई दुहाईयां दाँ।
हीर आज़ादी डोली अन्दर जपदी पई ए तेरा नाँ।
तेरे बाहजों दस हीरया किद्दां अज वधाईयां लाँ।
बैह के रोज़ बनेरे उतों हर दम रोज़ उड़ावाँ काँ
रो रो तेरे गम दे अन्दर अन्नों हो गई तेरी मां

(2)

पैरीं मेरी तक ज़ंजीरां अनख मुआते लये तूं वाल।
भावें पुत करोड़ां है ने कोई नहीं मिलदा तेरे नाल।
किद्दाँ भुलावां भुल नहीं सकदा दिलविच उठन पये उबाल।
रब्बा मेरया जग दे अन्दर जिऊंदा होवे मेरा लाल।
वैन जदों ने दिलविच पैंदे किद्दां तेरियां घोड़ियां गाँ।
रो रो तेरे......

(3)

तूँएं तूं गुलामी वाला मेरा वढिया पुत्रा जाल।
हत्थीं पाके चूड़ा सूहा तैनूं रही आज़ादी भाल।
सेहरे बन्ह के ढुकन वाले आ जाँदे ने डोली नाल।
वरयां तूं मैं तेल चोण नूं मल्लया होया बूहा लाल।
अम्फज दे विच लड़दा २ तुर गयां किथे सदके जां।
रो रो तेरे......

(4)

वल वल उट्ठन सीने हावां आजा न कर मेरा खून।
मोई होई नूँ मार न पुत्रा गमां दिता अग्गे चून।
मेरियां अलयां फट्टां उत्ते काहनूं पया बरूरें लून।
जे तूं मर गया मर गये सारे मेरे भा दी पै गई तून।
दस जिगर दे मेरे टुकड़े किन्नूं नाल कलेजे लां।
रो रो तेरे......

(5)

वाजां मार बुलावां तैनूं बोल बोल खां पुत्रा बोल।
आजा मेरे दिल दे चानण बुढी मां दे हड न रोल।
अग बुझाजा दिलदी मेरी दो चार घड़ियाँ बैहके कोल।
जिंद जवानी मेरा खातिर सचमुच पुत्रा छड्डी घोल।
खिचया जेकर आजाएं चंन्नां खिच प्यारदी मन्नां तां।
रो रो तेरे ....

(6)

भौंदा रिहाँ सौदाईयाँ वांगू तेरे सोहल सरीर दे सदके।
आजा फौजी वरदी पाके मैं तेरी शमशीर दे सदके।
जिऊनी पई आं अजतक पुत्रा मैं तेरी तसवीर दे सदके।
प्यार तेरा पया ठाठाँ मारे आजा वगदे नीर दे सदके।
शेर दलेरा मर्द मैदाना बैह गयां जा के केहड़ी थां।
रो रो तेरे......

(7)

छत्तर झुला के तुर गयां काहनूं किस गल दी ए संगी तैनूं ।
पब्बियाँ चुक २ पई निहारे सोहनयाँ कंचन जंगा तैनूं ।
पैर धोन नूं अड़या तेरे लभदी फिरदी गंगा तैनूं ।
आ जा आ आ जा शेर बहादुर सद्दा देवे तिरंगा तैनूं ।
इक वार जे परतें पुत्रा तेरे सिर ते छत्तर झुलां ।
रो रो तेरे गम दे अन्दर अन्नी हो गई तेरी मां ।

———

जवाना

(1)

जग दे उते वजदे पये ने अज ते मारू ढोल जवाना ।
जंग हनेरी झुलनी आखर होके रहने घोल जवाना ।
कफ्फन बन्ह के सिर दे उते ज़रा भुजावां तोल जवाना ।
वाजां मार बुला लै होनी मौत बहा के कोल जवाना ।
सिद्धा हो जा वैरियां वाले करदे बिस्तर गोल जवाना ।
मंगां मंगदी भारत माता उठ जवानी घोल जवाना ।

(2)

तेग तेरी ने लक्खां वारी वैरी कीते गर्क जवाना ।
मौत दे वेहड़े लुडी पानो तूं नहीं करदा फर्क जवाना ।
रंगे दे इतिहास सुनहरी देन गवाही वर्क जवाना ।
तैनूं तक के विच मैदाने वैरी जांदे यर्क जवाना ।
हमला मार के वैरियां वाली मिट्टी दे तूं रोल जवाना ।
मंगा मंगदी......

(3)

चंडां वांगूं वैरी दल नूं पल विच जाना फक जवाना ।
लक्कों टुटे वैरी आके बन्ह लवें दर लक जवाना ।
उठें होए तूफान हज़ारां पल विच लैना डक जवाना ।
सदा नितारा विच मैदाने कर देना दो टक जवाना ।
सावें तेरे कोई वी आवे करघर देवें खोल जवाना ।
मंगा मंगदी......

(4)

वार तेरे नूं विच मैदाने कोई नहीं सकदा झल जवाना।
कफ्फन बन्हके जद तूं निकलें मौत नूं लैंना वल जवाना।
तेग मियानों जद वी कड्डें पा देना तरथल जवाना।
रोशन तेरा जग ते नावां सिरलथ तेरी अल्ल जवाना।
तेरे सावें वैरी रण विच कोई न सकदा बोल जवाना।
मंगां मंगदी......

(5)

तेरे नां तों देश द्रोही सुन के जांदे कम्ब जवाना।
तेरे सावें वैरी दल दी बोल जांदी ए बम्ब जवाना।
अनख आन दे लाके लांबू कड देवें तूं लम्ब जवाना।
जद तूं नचें सोस नचावें तेग नूं लाके खम्ब जवाना।
विच मैदाने जद तूं गज्जें धरतो जाँदी डोल जवाना।
मंगाँ मंगदी......

————

पी पी के रंगे वेखना

(1)

खुले नज़ारे इश्क दे गलियां च' नन्गे वेखना।
वड़कां ते लाफां मारदे थां २ लफंगे वेखना।
मैं योधयां दी नसल दे वच्चे तलंगे वेखना।
नादान अपनी कौम दे जुलफां दे डंगे वेखना।
सड़दे हुसन दी लाट ते अल्हड़ पतंगे वेखना।
मैं लाल अपनी कौम दे पी पी के रंगे वेखना।

(2)

मैं नाज़ ते अन्दाज़ दे शोले भड़कदे वेखना।
फट्टल निगाह दे तीर दे रुलदे सड़क ते वेखना।
अज डोलियां दी थां ते मैं दिल फड़कदे वेखना।
अज खंजराँ दी थां ते पिंजर खड़कदे वेखना।
शेरां दे बच्चे अज मैं लूले ते लंगे वेखना।
मैं लाल अपनी कौम दे पी पी के रंगे वेखना।

(3)

विकदी जवानी कौम दी मैं भो दे भाड़े वेखना।
नाज़क लबां ते सहकदे हौके ते हाड़े वेखना।
कोमल दिलां ते इश्क दे वजदे दुगाड़े वेखना।
हर दम शराबी नैन मैं लगे दे ताड़े वेखना।
इश्क दी सूली ते मैं अरमान टंगे वेखना।
मैं लाल अपनी कौम दे पी पी के रंगे वेखना।

(4)

मैं इश्क नूं अज हर जगह् लांदा उडारां वेखना ।
मैं हुसन दियां हर जगह पईयाँ ने वारां वेखना ।
मैं हर जगह ते हो गईयां प्रधान नारां वेखना ।
इखलाक दी चादर ते मैं धब्बे हज़ाराँ वेखना ।
'वैहश' दी अज ते कौमदे होगये ने कँघे वेखना ।
मैं लाल अपनी कौम दे पो पी के रंगे वेखना



इश्क

(1)

पागल होई ए सारी खुदाई या ते हो गया अज भगवान पागल।
जिधर वेख लो इश्क दे हैन रौले बिल्कुल होगया अज इंसान पागल।
थां थां सहती फ़र्हाद दे होन चर्चे हो गये ने अज प्रधान पागल।
बन गये शमां पतंगा अनवान दोवें हो गये बुड्ढे जवान नादान पाग़ल।
दुनियां कवियां बनाई ए खूब उल्लू रुतबे उच्चे जहान ते पान पागल।
गीत गूंजदे दर्द फराक वाले धरती माता दी होई सन्तान पागल।

(2)

होए इश्क कमबख्त दा नास जग तों फुर्कन दिते नहीं किसेदे बुल एने।
चुन २ के नकश इखलाक वाले जग तों मेट दिते बिल्कुल एने।
जिस कौम ते इस दा पया साया चुने ओस नमानी दे फुल एने।
रूमा, मिसर, यूनान दे कहन खंडर दीवे असां दे कीते ने गुल एने।
इश्क वरसा ए निरा दीवानयाँ दा एहनूँ जग ते सदा कमान पागल।
गीत गूंजदे......

(3)

मैं पुछ्ना इश्क दे बन्दयां नूं हैसी इश्क दा कोई मुदई मजनु।
लेला लेला पुकार के बनां अंदर लल्लां रिहा लैंदा लेला लई मजनु।
भंडन वास्ते ओस गरीबनी नूँ चुमदा कुत्तयां नूं रिहा लई मजनु।
पुटदा रिहा इखलाक दी जड़ां ताईं फड़ के इश्क बेपीर दी केई मजनु।
मजनु होया सरदार सब आश्काँ दा बड़े मान दे नाल फर्मान पागल।
गीत गूंजदे ......

(4)

दूजा होया आशक महोंवाल एथे पट पाड़ के कीता कबाब जिने
लटक लाके सोहनी नूँ प्यार वाली कीता ओसदा खाना खराब जिने
भाँडे वेचदी होई गरीबनी नूं डोरे दौलत दे पाये जनाब जिने
झुग्गी दूर चनां तों पार पाके लुटया ओस दा मस्त शबाब जिने
ओहो आश्की दा दम मार बहिंदा जज़बे जिंदे वी हुन्दे नें आन पागल
गीत गूंजदे......

(5)

आश्क होया ए तीसरा जग उते जिन्नु आखदे ने खासो आम रांझा
पटू पाके होर नू वन्जली दा बुद्धू कर गया निमक हराम राँझा
मज्झां चारके हीर नु चारदा सी खा २ चूरियां सुबह ते शाम रांझा
पत्तन जिन्ने ज़माने तें तरे छत्ती हैंसी जग ते ओह वदनाम रांझा
हनेर साईं दा लुच्चे वी होए उच्चे पूजे जग ते अज वो जान पागल।
गीत गूंजदे......

(6)

सदियाँ तूं होयां आज़ाद हिन्दी रब दे वास्ते इश्क बे पीर तों बच।
दोज़ख विच पई मजनु दी रूह आखे बच इश्क बेपीरे वतीर तों बच।
इश्क अन्नयाँ करे सुजाखयां नूं दिल नूं सांभ ते ज़ुल्फ ज़ंजीर तों बच।
चोला देशप्यार विच रंग वैहशो सस्सी-सोहनी-ते वारिस दी होर तोंबच
हड़ इश्क दे हड़े न डक्क हुन्दी कीता इश्क ने सारा जहान पागल।
गीत गूंजदे ......

————

(1)

की कहना ए मर्द दा की मर्दां दी शान।
एह धरती दे चन्द ने जो धरती नूं चमकान।
एह फिरन द्वाले मौत दे ज्यों पंबट चक्कर खान।
जान टका के तली ते एह मौत व्याहवन जान।
लुडियां पांदे नच के जद तेगां गिद्दे पान।
योधे मौत कबूलदे पर सहिंदे नहीं अपमान।

(2)

जद धरती दी हिक तों उठदे आन भुचाल।
हिक्कां तद एह तान के तेगां लैन सम्भाल।
एह नज़राने सिरां दे देंदे चाहवाँ नाल।
एह धरती नूं रंग के लहू नाल करदे लाल।
सीस टका के तली ते जग नूं एह समझान।
योधे मौत......

(3)

होनी लैंदी जग ते जद जंगी राग अलाप।
डौले फड़कन मर्द दे फिर आके आपे आप।
तेगां मर्द उलार के फ़िर हिक्कां देंदे नाप।
अनख आन नूं पूज़दे लैके लहू दी छाप।
सीस इन्हांदे नच के तेगां ते मुस्कान।
योधे मौत......

(4)

रत्ती जद तक रत दी रहिंदी विच शरीर।
तेगा वरदियां तक के डोलन कदों रणधीर।
एह लीकन लहू नाल अपने कौमाँ दी तकदीर।
सिर लत्थे धड़ इन्हांदे लड़दें रहन अखीर।
एह हानी वन के मौत दे होनी नूं यरकान।
यीधें मौत......

(5)

एह गाने बन्ह के मौत दे पूजन देश प्यार।
एह नच के कौमी उमंग ते देन जवानी वार।
लहू नाल खेडन होलियां जद सूतन ए तलवार।
एह मौत तंगाड़े चुक के देंदे अनख नतार।
एह लहू नाल अपने रंग के कौमां करन जवान।
योधें मौत......

बापू गांधी

(1)

लैके श्रद्धा दे फुल अज नाँल श्रद्धा हाज़र होए हाँ तेरे हज़ूर बापू ।
शमाँ बाल के एथे आज़ादियाँ दी कर गया देश मेरा नूरोनूर बापू ।
जेहड़ी मैह पिलाई ए प्यार वाली अजे लत्था नहीं ओदा सरूर बापू ।
फिरकादारी दे वड्डे तूफान विचों बन्ने लाया तूं देश दा पूर बापू ।
लैके तेग अहिंसा दी शेर मर्दा कढया वाह वाह गुलामी नूं दूर बापू ।
लाके मरहम प्यारां दी वल कीते भारत माँ दे दिली नासूर बापू !

(2)

भारतवर्ष दी शान चमकान खातिर जेलां विच जवानी नूँ गालया तूं ।
आकड़ नाल हटा के ओकड़ाँ नूं अंग देश दे प्यार दा पालया तूँ ।
बालन वास्ते शमां आज़ादियां दी खून अपने जिगर दा ढालया तूं ।
अमृत वंड के देश प्यार वाला मुर्दा कौम नूं फेर जुवालया तूं ।
चढ़ गये नच के दारां दे तख्तयां ते तेरी मंग ते कई मनसूर बापू ।
लाके मरहम......

(3)

कोई नहीं एस ज़मीन ते हो सकदा वधके तेरे तों कौम फकीर सदके ।
कासा जदों बनाया तूं खोपरी दा तेथों होई आज़ादी दी हीर सदके ।
सत्तर कज्जया गया सी हिन्दयाँ दा बापू तेरी लंगोटी दी लीर सदके ।
तेरे देश प्यार तों जां सदके देश प्यार लई होयों आखीर सदके ।
एथों कढ के डैन गुलामियां दी आँदी तूं आज़ादी दी हूर सदके ।
लाके मरहम......

(4)

तेरे इश्क ने सदकया मान सानूँ सचमुच प्यारा तूं देश दा सें।
जिथो मिलदीसी रोशनी हिंदियाँ नूं ओहो रोशन मनारा तूं देशदा सें।
जदों चमकयों चमक पई कौम मेरी असल विच सतारा तूं देशदा सें।
तुरदा रिहा सहारयाँ नाल भावें ऐपर वड्डा सहारा तूं नेश दा सें।
कफ्फन बन्ह के देश प्यार खातिर कढया आखर फरंगी दा कर बापू।
लाके मरहम......

(5)

जदों कदी वी आया एं याद सानूँ फुट २ के रोये आँ असीं बापू।
बिना तेरयों दुखां दे तेल अंदर मच्छी बांग तलोये आं असीं बापू।
तेरे लहू नाल रंग के हथ अपने हौंले कक्खां तों होये आं असीं बापू।
मरन बाद वी तेरा ए नाँ कायम मोया तूं नहीं मोये आँ असीं बापू।
तेरे चरनां ते झुके आखीर आके वेवल जिहे शैतान मगरूर बापू।
लाके मरहम......

(6)

तूं पीर फकीर ते औलया सें स्यास्तदान कहिंदे स्यास्तदान तैनूँ।
ओनां हिन्दी दा जगतें मान होया जिन्ना मिलया ज़माने ते मान तैनूँ।
भागां वालया भाग चमका गयाएं हिंदी समझदा अपना भगवान तैनूं।
जद तक रहनगे जग ते चन सूरज तद तक पूजेगा हिन्दोस्तान तैनूँ।
तूं न कौमो गद्दारां तों वच सकयों एहो कोम ते गिला ज़रूर बापू।
लाके मरहम......

————

जद वी शक्ति भेटां मंगे

(1)

दुनियाँ दे विच कौमां ताईं जीवन देश दीवाने दंदे।
हिक्काँ डाह के एह मर्दाने तन के बदल ज़माने दंदे।
टुटे भज्जे तोराँ ताँईं एह ने चाढ़ कमाने दंदे।
खोपरियां दे जाम बनाके भर भर अनख पैमाने दंदे।
अपने लहू नाल लीकां पाके लोक नवीं अफ़साने दंदे।
जद वी शक्ति भेटां मंगदी सिरियाँ दे नज़राने दंदे।

(2)

लाके अनख पलीते दिल नूं तेगां ते मुस्कान हमेशा।
लाड़ी मौत ब्याहवन खातिर हो जांदे कुर्बान हमेशा।
विच मैदाने तलियां उत्ते सीस टका के जान हमेशा।
ए कौमां नूं जीवन दंदे लहू दी लाके पान हमेशा।
जदों मौत दा सौदा करदे लाके धौन ब्याने दंदे।
जद वी शक्ति......

(3)

अज तक शक्ति मात हमेशा मान एन्हां ते करदी आई ए।
गोल्ली बन तकदीर एन्हां दी हरदम पानी भरदी आई ए।
एन्हां दे जैकारे लाके मौत एहनां नूं वरदी आई ए।
मौत दीवानी आशक होके एन्हाँ उत्ते मरदी आई ए।
एह हिक्कां नूं सान बनाके चाढ़ कौमां नूं साने दंदे।
जद वी शक्ति......

(4)

जिस धरती ते लहू ए डोलन ओथे जम्मन लाल हमेशा ।
जिन्द जवानी कौमाँ खातिर ए देंदे ने गाल हमेशा ।
जद वी दौर तूफानी आऊंदा एह बनदे ने ढाल हमेशा ।
चर्बी कढ के हिक्काँ विचों देन दीवाली बाल हमेशा ।
जिंद गवा कौमाँ ताईं जीवन ए पर्वाने देंदे।
जद वी शक्ति......

(5)

देश दीवाने देश दे अंदर पैन नहीं देंदे हद्दां पाड़े ।
विच मैदाने एह मर्दाने कढ लैंदे ने दिल दे साड़े ।
जद वी होनी कूकां मारे चुक लैंदे ने मौत तंगाड़े ।
वांग पतंगे नच्चन वाले एह हुन्दे ने कौमी लाड़े ।
आओ सिरां दा खेडो जुआ होके एह मर्दाने देंदे।
जद वी शक्ति......

————

घर घर जमना रांझयां ने

(1)

भारतवर्ष जागीर ए आश्कां दी,
हुन कायम नज़ीरां ईं होनियां ने।
दिल वालयाँ नूँ दिल लभने नहीं,
एथे दिल दियां लीरां ईं होनियाँ ने।
नाराँ लग गए हुसन दी सान उत्ते,
शीरीं वाँग शमशीरां ईं होनियां ने।
जिहा इश्क दा गर्म बाज़ार होना,
पैरीं ज़ुलफ ज़ंजीरां ईं होनियाँ ने।
इश्क साहिबां दा एथे मशहूर होना,
मिरज़े वांग ज़मीरां ईं होनियाँ ने।
घर घर विच जम्मना राँझयां ने,
पोटे पोटे ते हीरां ईं होनियाँ ने।

(2)

वाह वाह विच क्लब्बाँ दे नाच करदे,
मेरे देश दे अलड़ जवान बाँके।
धुम्माँ पानगे नाल नज़ाकतां दे,
नाज़क बदन मलूक नादान बांके।
इश्क पेचा वी ज़ुलफां ते पेच खांदा,
ज़ुलफां बांकियां जदों बनान बांके।
फट्टड़ होके सारा जहान तड़फू,
जदों मारनगे नैनां दे बान बांके।
एना कोल सरमाया जवानियां दा,

मरन बाद तहरीरां ईं होनियाँ ने
घर घर च......

(3)

जुलफां सुट के लाल रुखसारयां ते,
पाके भौंदे ने कोट पतलून बांके
तेग हुसन दी सान ते लान खातिर,
नाहुँदे मल के इतर सबून बांके
हांवां हौकयां विच मसरूफ़ रह के,
पींदे अपने जिगर दा खून बांके।
करन दिलाँ दे सरे बाज़ार सौदे,
लै के प्यार दा दिल विच जनून बांके।
मुहम्मद शाह रंगीले जो खिचियां सन,
साडियां ओहो लकीरां ईं होनियां ने।
घर घर च......

(4)

ज्यों ज्यों लग्गने देश नूँ भाग आके,
त्यों त्यों होयेगी खूब प्रधान विसकी।
साकी बनना एं हूरां अलबेलियाँ ने,
हर इक पियेगा बुढा जवान विसकी।
भरे रहनगे मट्टां दे मट एथे,
रज रज पीनगे बाल नादान विसकी।
जेहड़ा पिये ओह जिये कानून बनना,
हर इक महफल दी बनेगी जान विसकी।
पियो पियो ते जियो जहान अंदर,

थां थाँ एहो तकरीरां ईं होनियां ने।
घर घर च......

(5)

बह के विच क्लबां दे चौवी घण्टे,
हर इक खेडेगी अल्हड़ मुटयार जुआ।
घड़ा, दड़ा ते रम्मी प्रधान करके,
असां दसना साडा व्योपार जुआ।
भावें सोल्ही ते भावें प्रेल होवे,
असां खेढना सरे बाज़ार जुआ।
जुआ खेढना खेढना चाहीदा ए,
जद तक ज़िन्दगी ए मरे यार जुआ।
असां जित्तना सारा संसार आखिर,
जुए नाल तामीरां ईं होनियाँ ने।
घर घर च......

(6)

क्यों न हुसन दी असीं नुमाईश करिये,
मेरा देश ए जदों रंगीनां दा देश।
क्यों न बनन जलेबीयांदार जूड़े,
मेरा देश ए जदों हुसीनां दा देश।
शौक नाल नचावाँगे असीं नाराँ,
भारतवर्ष ए जदों शौकीनां दा देश।
हुन नच्चन नचान ए आर्ट साडा,
ए देश ए नर्गिस ते बीना दा देश।
एह युग ए पौडर ते सुरखिया दा,
नारां हुन तसवीराँ ईं होनियां ने।
घर घर च......

पूजे जांदे जग दे अन्दर

(1)

तेरा फर्ज़ ए वतन पुजारी हो जा तूं कुर्बान वतन तों।
जिन्द जवानी दा ते लाके करदे सदके जान वतन तों।
ओईयो लीकन नवें फसाने मरके जो मुस्कान वतन तों।
देंदे ने इतिहास गवाईयां मरना वड्डी शान वतन तों।
सदके जावां देश दीवाने वार दिली अरमान वतन तों।
पूजे जांदे जग दे अन्दर हस के जो मर जान वतन तों।

(2)

मोईयां मुकियाँ कौमां ताईं देंदे ने मर्दाने जीवन।
जिंद जवानी दा ते लाके पांदे देश दिवाने जीवन।
दे जाँदे ने कौमां ताईं सिरियां दे नज़राने जीवन।
बनदे आए ने जग दे अन्दर शहीदां दे अफसाने जीवन।
मर्द मैदानी कुझ नहीं मंगदा मंगदा अनख ते आन वतन तों।
पूजे जांदे......

(3)

देश प्यार दी फोटो रखी जिन्हां विच तसव्बर जड़के।
बनगये मौत मुजस्सम योधे ओईयो मौत दे सांवें अड़के।
जीवन लभ्भे मौत दे विचों मर्द मैदाना जंगां लड़के।
बन जांदे ने लाट पतंगे लाट शमां दी उत्ते सड़के।
दस गये ने वतन पुजारी उच्चा नहीं भगवान वतन तों।
पूजे जांदे......

(4)

जद तों दुनियां होई ए कायम वजदे जंगी साज रहे ने ।
मर्द मैदाना शहीदां उत्ते इस दुनियां नूँ नाज़ रहे ने ।
इस दुनियां दी दुनियां अन्दर बन के मर्द आवाज़ रहे ने ।
लक्खां दौर ज़माने बदले बाज़ फिर वी बाज़ रहे ने ।
इस तों भाग उचेरे कीह ने लभ्भन जे शमशान वतन तों ।
पूजे जांदे......

(5)

ओईयो कौम ज़माने उत्ते दुनियां दी सरदार रही ए ।
जिस कौम दी मंज़िल साथी जग ते देश प्यार रही ए ।
वैर रिहा ए वैरी तीकर ओह यारां दी यार रही ए ।
अमन रिहा ए बुल्लाँ तीकर हत्थां विच तलवार रही ए ।
वैहशी गीत उन्हांदे गाऊंदा जेहड़े सीस कटान वतन तों ।
पूजे ज़ांदे......

कौम

(1)

जेहड़ी कौम विच नाज़क अन्दाम जम्मे,
हो के जग दे विच बदनाम मर गई।
फैशन वालियाँ कौमां दा हशर की ए,
कोई सुबह मर गई कोई शाम मर गई।
जिऊंदी कदे नहीं कौम रंगीलियां दी,
कीता जिन्ने वी ऐश आराम मर गई।
जेहड़ी कौम ने जाम ते जाम पीते,
पीके अन्त नूं मौत दा जाम मर गई।
जेहड़ी कौम ने इश्क दे खेढ खेडे,
होया अन्त नूँ एह अन्जाम मर गई।
जेहड़ी कौम ने अनख निलाम कीती,
होके जग दे विच निलाम मर गई।

(2)

कौमां तरियां ने ओहो जहान अन्दर,
लाईयाँ जिन्हां ने लहू विच तारियां ने।
जिन्हां कौमां ने लबियां जग अन्दर,
लबियां सिरां दे नाल सरदारियां ने।
जिन्हां कौमाँ ने जिऊंना ए जहान अन्दर,
ओहनां हिम्मताँ कदे न हारियां ने।
जीवन कौमां दा एस जहान अन्दर,
सदा बदलया तेगां दोधारियाँ ने।

जेहड़ी कौम ने पैर सम्भालया न,
ज़ोरावराँ दी होके गुलाम मर गई।
जेहड़ी कौम ने......

(3)

जिऊंदे जिऊंदे वी मोयां तों हैन बदतर,
जग ते मौत दे नाँ तों डरन वाले।
सदा दौर ज़माने दा बदलदे ने,
जग दे विच कुर्बानियां करन वाले।
मरन बाद वी जिऊंदे ने जग अंदर,
मर्दे कदे नहीं कौम तों मरन वाले।
नचदे रहिंदे ने कौम दे दिलां अन्दर,
सिर नच के तली ते धरन वाले।
जेहड़ी कौम इखलाक नूं वेच बैठी,
बुद्धू करके बज़ुर्गां दा नाम मर गई।
जेहड़ी कौम ने......

(4)

सिरां नाल सरदारियाँ लभदियां ने,
दसदी पई तवारीख इनसान दी ए।
जेहड़ा देश ते कौम दे कम आवे,
कदर जग ते ओस इनसान दी ए।
पूजे जांदे ने या ते असूल जग ते,
पूजा या हुन्दी अनख आन दी ए।
जिन्नूं खून शहीदां दा मिले ताजा,
ओईयो कौम जवानियाँ मानदी ए

जेहड़ी कौम दी हड्डी हराम रचया,
जग दे विच ओह मौत हराम मर गई।
जेहड़ी कौम ने......

(5)

दुनियां जिन्हाँ ख्यालां नूं खाब समझे,
पूरा कर के मर्द वखाल जांदे।
हिक डाह के हिक दी ज़ोर उत्ते,
मर्द बदल जमाने दी चाल जाँदे।
जिधर जिधर वी मर्द दे पैर जांदे,
पैर पैर ते औंदे भुचाल जांदे।
चर्बी ढाल के हिक चों देश खातिर,
मर्द सदा दीवालियाँ बाल जांदे।
कौम मुकी नहीं कदी मर्दानयाँ दी,
कौम बुज़दलां दी जग ते आम मर गई।
जेहड़ी कौम ने......

—::0:.—

नवां तूफान

(1)

जीवे मरे ओह देश दे प्यार सदके,
दुनियां विच एह धर्म इनसान दा ए।
मारे जाँदे ने कुत्ते दी मौत बुज़दिल,
एनी गल मर्दूद न जानदा ए।
मान मानदा ओहो जहान अन्दर,
जेहड़ा मौत दी सेज नूं मानदा ए।
होया की जे हारया जंग अन्दर,
कायम ताँ वी नाम चौहान दा ए।
जीवन मौत दी गोद चों लभदा ए,
एहो फलसफा कृष्ण भगवान दा ए।
अमन जमदा जंग दे पेट विचों,
जोड़ शान्ति नाल तूफान दा ए

(2)

अदला बदली संसार दे हैन चक्कर,
चक्कर विच संसार ने सदा रहना।
कदे खिज़ाँ कदे बहार आऊनी,
खिज़ाँ नाल बहार ने सदा रहना।
गुड्डी चढ़ी नहीं किसे दी सदा रहनी,
नाल जित दे हार ने सदा रहना।
दुनियां खसम दे बिना नहीं रह सकदी,
घोड़े नाल सवार ने सदा रहना।

मर्द मौत नूं वेख के हसदे ने,
डरना मौत तों कम नादान दा ए।
ठिल्लां ठिलदियां वेख के ठिल जाँदे,
जिन्हां वेखना ज़ोर तूफ़ान दा ए।

(2)

धौन मर्द दी हुन्दी ए तली उत्ते,
हुन्दी धड़ ते मर्द दी धौन कित्थे।
औंदी मौत नूं पूजदा मर्द जंगी,
कोल मर्द दे मौत दा औन कित्थे।
मारू राग अलाप के मर्द जंगी,
गीत मौत नूँ देंदा ए गौन कित्थे।
मर्द जदों तीक आप नहीं सौं जाँदा,
भला मौत नूं देंदा ए सौन कित्थे।
क्यों न मर्द खेडे जदों मौत खेडे,
चाह मर्द नूं मौत खडान दा ए।
मुंह न मर्द दा कदे तूफान मोड़े,
मुंह मोड़दा मर्द तूफान दा ए।

(3)

मर्द मर्द एह मर्द दा कीह कहना,
भारू हो हज़ारां ते इक सकदा।
एहदी हिक दे विच है ज़ोर ऐना,
हिक दे ज़ोर जमाने नूँ हिक सकदा।
होनी ऐस दी झाल नहीं झल सकदी;
काल ऐसदे सांवें नहीं टिक सकदा।

रब विकया जमाने ते कई वारी,
मर्द नहीं विकया न एह विक सकदा।
मोढी अनख दा रिहा ए मर्द मुढों,
मर्द जन्म दाता अनख आन दा ए।
ऐहदा अनख ते आन जद पाये लुड्डी,
जन्म हुन्दा फिर नवें तूफान दा ए।

(3)

राम राज दा मतलब ते एह नहींगा,
साडी जग उत्ते बोलो राम हो जाये।
मतलब एह नहीं अमन ते शान्ति दा,
साडी अनख ते आन नीलाम हो जाये।
मतलब एह नहीं यारी ते दोस्ती दा,
इक दूजे दा जीवन हराम हो जाये।
पंजशील दा मतलब नहीं हिन्दिया ओए,
जेकर बन्दे दा बन्दा गुलाम हो जाए।
सुन के जंग दे नारे न चुप बैठे,
फर्ज़ अज एह मर्द मैदान दा ए।
हिक्कां तानके निकले मैदान अन्दर,
दौर आ गया नवें तूफान दा ए।

(4)

सौं रब दी रब गवाह सच्चा !!!
दित्ती किसे वी खार ते नच जाना।
धार लये ने धारने दिलां अन्दर,
असां तेग दी धार ते नच जाना।

गर्म गर्म तकरीरां ने गर्म कीता,
आई जदों वंगार ते नच जाना।
असाँ किसे दा हुकम उडीकना नहीं,
वैरी होवे संसार ते नच जाना।
होने फैसले तेग दी धार उत्ते,
एहो फैसला हिन्दी जवान दा ए।
कफ्फन बन्ह के हिन्दी तैय्यार बैठा,
दौर आ गया नवें तूफान दा ए।

राणा सांगा

ईकासीवां ज़ख्म

(1)

सौं रब दी वड्डे सिकन्दरां दे
जंग विच साडी तलवार ने फुल चुन लये।
जेहड़े छातियां तान के आये ऐथे
ओहनां शाहसवाराँ दे फुल चुन लये।
असां गैराँ नूं बोच्चिया फुल वांगू
साडे घर दियां खारां ने फुल चुन लये।
भारतवर्ष दे नामियां योद्धयां दे
ऐहनाँ कौमी गद्दारां ने फुल चुन लये।
चीर दित्ता गद्दारां ने दिल साडा
चीरा दे के देख लौ चीर लक्खां।
आऊंदे याद ने जदों गद्दार पापी
वजदे विच कलेजे दे तीर लक्खां।

(2)

भारतवर्षं दे कौमी इतिहास उत्ते
चाढ़ गया शहादत दा रंग सांगा।
ओहदी तेग दे वेग तों जाँ सदके
कौमी शमां दा होया पतंग सांगा।
कफ्फन वन्ह के देश दे प्यार खातिर
लड़दा रिहा ए जंग ते जंग सांगा।
वाहवाँ पाके मौत दी बगल अन्दर
नचदा रिहा ए मौत दे संग सांगा।

किस्से दसदे ने ओहदी बहादुरी दे,
होया राजपूताने दा शेर सांगा।
फट खादे हज़ारा ही जंग अन्दर,
पर न डोलया कदे दलेर साँगा।

(3)

सौं रब दी वैरी कमान हुन्दे,
लै के जांदा सी जदों कमान अग्गे।
फट खान लई हिक ते वैरियां दे,
तन के देंदा सो हिक नूं तान अग्गे।
अग्गे रखया सदा ई वैरियां नूँ,
वैरी दित्ते न कदे वी जान अग्गे।
जद तक रिहा ओह रिहा सिर-लथ योद्धा,
ओहदा झुलदा रिहा निशान अग्गे।
कान्ना हो गया जंगी मैदान अन्दर,
अन्नीं तां वी मचाँवदा रिहा सांगा।
भावें गई मैदान विच लत वड्ढी,
तां वी तेग नचाँवदा रिहा सांगा।

(4)

बाबर सोचया दिल्ली नूं ज़ेर करके,
हुन मैं राजपूताने नूँ ज़ेर कर लां।
मन्नी गई ए तेग दी धार मेरी,
ज़ेर मर्द मैदान दलेर कर लां।
धानां वांग मैं भुन के वैरियाँ नूं,
काबू राजपूताने दे शेर कर लां।

जिद्दाँ लोधी नूं हटा के ढेर कीता,
ओहदां सांगे नूं हटा के ढेर कर लाँ।
लै के जंगी रसाले ते पलटनां नूं,
बाबर पान लई नवां फतूर तुरया।
मारो मार कर के तोपां बीड़ के तें,
होके विच घमण्ड दे चूर तुरया।

(5)

हैसो बाबर दे दिल विच यकीन पक्का,
मेरे सांवे नहीं कोई खलो सकदा।
मेरे नाल मैदान दे विच आ के,
हथ कर नहीं कोई वी दो सकदा।
जद तक तोपां ते गोले ने कोल मेरे,
मेरी वाह नूं कोई नहीं छो सकदा।
भारतवर्ष दे विच ऐस दौर अन्दर,
मेरा नहीं मुकाबला हो सकदा।
कोई खुले मैदान विच आए वैरी,
पल विच बरबादियां भोल दां गा।
मौत नच्चेगी जंगी मैदान अन्दर,
घग्गर गैह के वैरी दे खोल दां गा।

(6)

बाबर वेखया जंगो मैदान अन्दर,
फौजां लै के खड़ा तैय्यार सांगा।
नच्चन वास्ते तेग दी धार उत्ते,
चुमदा पया ए तेग दी धार सांगा।

वढ के भत्ते चों तीरां ज़हरीलयां नूं,
ज़ुल्फ मौत दी रिहा सुआर सांगा।
नेज़ा गड्ड के धरती दी हिक उत्ते,
फिर फिर वेखदा पया शकार साँगा।
बिजली वांग पये दूरों ई लिशकदे सन,
अस्सी वज्जे होये ओहदे शरीर दे फट।
वट्टी वांग ए मौत नूं वट देगा,
कहिंदे पये सन ओसदे मत्थे दे वट।

(7)

जदों बाबर ने साँगा तैय्यार तकया,
अखाँ अग्गे बरबादियाँ भौन लगियाँ।
बिगुल जंग दे ओस नूं इञ्ज जापे,
गिद्दे जिद्दां कलजोगां पौन लगियाँ।
ओहनूं जापया जंगी मैदान अन्दर,
तेगां मौत दा राग ने गौन लगियां।
मत्था शेर दलेर नाल लान लगियां,
मत्थे उत्ते तरेलियाँ औन लगियां।
ताकत अपनी होर बनान खातिर,
वाह वाह चली स्यास्त दी चाल बाबर।
गल सुलह सफाई दी तोड़ दित्ती,
कीता खूब कमाल कमाल बाबर।

(8)

ओधर सद सिपाहियां नूं किहा ओन्हें,
अपने हत्थां दे उत्ते कुरान रक्खो।

कस्माँ लवो कि मराँगे जंग अन्दर,
कसमां खाके कायम ईमान रक्खो।
जेकर जिओगे करोगे राज ऐथे,
मर के मिलू बहिशत ध्यान रक्खो।
मारो हमवला बोच लो काफराँ नूं,
वेला आ गया तली ते जान रक्खो।
रब रिया ते ओस दा नां रहना,
हुन्दी आई ए होऊ इनसान दी मौत।
बुज़दिल मरदे ने कुत्ते दी मौत हरदम,
मर्द मरदे ने मर्द मैदान दी मौत।

(9)

जंगी बिगुल ते नच पये मर्द योद्धे,
आ गये रब्बी परवाने परवानयां लई।
सालू वालियां कोल इक घड़ी बहना,
मुशकल हो गया देश दिवानयां लई।
मंडप छड के जंग नूं गये लाड़े,
शगन मौत दे आये मरदानयाँ लई।
दर्शन सोहनी आज़ादी दे पान बदले,
लै के चल पये सीस नज़रानयाँ लई।
खफ्फन बन्ह के सिराँ ते शौक सेती,
अलहड़ बाल, जवान, नादान निकले।
सिर रख के तली ते शौक सेती,
उच्चा करन लई कौमी निशान निकले।

(10)

मानक रायो ने साँगे नूँ किहा ओधर,
धोखा कीता ए असां दे नाल बाबर।
पाके भुल भलैंईयां दे विच सानूं,

चल गया ए सुलह दी चोल बाबर।
हल्ला ओस वेले कदे बोल देंदे,
पैर कदे न सकदा सम्भाल बाबर।
अच्छा गल कोई नही दुनियां वेखना ए,
जलवा दियांगे जेहा वखाल बाबर
जंग प्यारी ए मां दे दुध कोलों,
साडा वाह ए सदा दो धारियाँ नाल।
चध के सानूं व्याह दे वाजयाँ तों,
प्यार रिहा ए जंगी नंकारयां नाल।

(11)

फिर फिर सांगा वी फौज नूं वेखदा सी,
आए होए सन जंगी कमाल सोहने।
ओहने देखिया तेग लटकाई होई ए,
बारां वरियां दे बाल गोपाल सोहने।
ओहनूं हस के किहा संगरामे राणे,
जंग बालाँ दा खेल नहीं बाल सोहने।
हाले दुध दियां दंदियां टुटियां नहीं,
किद्दां डक्केंगा जंगी भुचाल सोहने।
बच्चे किहा गटोली दी जंग अन्दर,
दित्ती कौम लई पिता ने जान राणा।
तेग मंग के पिता दी माँ कोलों,
आया पिता दा कर्ज़ चुकान राणा।

(12)

मारो मारो तें मरो एह कवे सांगा,
न कोई बुड्ढा जवान ते बाल लभ्भे।

तेगां मार के दस्सो ओह शेर मर्दों.
इक वार ते बाबर नूं काल लभ्भे।
ऐने सिरां ते धड़ां दे ढेर लाओ,
आया धरती ते इक भुचाल लभ्भे।
ऐनाँ रंग दिओ धरती नूं खून सेती
चप्पा २ इस धरती दा लाल लभ्भे।
बाज़ी सिराँ दी लाओ जवान मर्दों,
बच के कोई वी उक्का न जा सक्के।
पैर रख के भारत दी हिक उत्ते,
बाबर बच के सुक्का न जा सक्के।

(13)

ऐदां आन के फेर टकराए योद्धे.
जिद्दां दो तूफान टकरान लग पये।
वाह वाह खूब तलवाराँ दा नाच होया,
सिर उड के लुडियां पान लग पये।
उडे तीर फिर उडने सप बन के,
अग नाल फंकारियां लान लग पये।
भाले मौत दी भाल नूं आन निकले,
धड़ २ धड़ाँ तों सीस उड़ान लग पये।
मर्दां रंगया रंग मर्दानगी दा,
धरती रंगी गई लहू दे रंग अन्दर।
अग्गां उगल के तोपां ने मुंह विचों,
नक्शा हशर दा खिचया जंग अन्दर।

(14)

उदय सिंह जद शेरे दे वांग आया,
कोई न ठहरया उस दे वार अग्गे।

गये गाजरां वांगराँ मुगल वडे,
चन्द्र दत दी तेज़ तलवार अग्गे।
धावा मार के मुगल दी फ़ौज उते,
जंगी वद गये कई हज़ार अग्गे।
मर गये राजपूताने दे मर्द आखिर,
मार खा के तोपां दी मार अग्गे।
रायो सविंगर ने राना नूं किहा आके,
साडी पेश नहीं तोपां ने जान दित्ती।
वैरी हिकया हिक दे ज़ोर उते,
हिक जिधर वी असां ने तान दित्ती,

(15)

राणे आखया मरण विच ज़िन्दगी ए,
दुनियां कायम ए सरब्बी कानून दे नाल।
लहू धोंदा ए दाग़ गुलामियां दे,
धोते जांदे नहीं कदे साबून दे नाल।
ठण्डे खून नाल अग्ग न होए ठण्डी,
ठण्डी अग्ग हुन्दी गर्म खून दे नाल।
पब्वट वांग अज जुलम दी शमां उत्ते,
सड़ना पैना ए सानूं जनूंन दे नाल।
हो के ओंकड़ा कोलों मायूस जग ते.
मर्द वेखया कदे न डोलदा ए।
मर्द कदे नकामियां वेखदा नहीं,
जीवन मौत दी गोद चों टोलदा ए।

(16)

योद्धे नच्च के मौत नूं वरन निकले,
जीवन मोह नूँ दिलों विछोड़ दित्ता।
करके गल एह होया हवा साँगा,
मूंह दोवाँ ने जंग नूँ मोड़ दित्ता।
सविंगर रायो ने तोपां दा रुख कीता,
रिशता मौत नाल जंगी ने जोड़ दित्ता।
दम तोड़या तोपां नूं बन्द कर के,
मान बाबर अकाबर दा तोड़ दित्ता।
धावा मारया फिर संग्राम राणे,
डर नहीं सी ओस दी खल अन्दर।
पैर मुगलाँ दे फ़ौरन उखाड़ दिते,
राजपूती तूफान ने पल अन्दर।

(17)

नच्ची सांगे दे तीरां ते मौत वाह वाह,
होया जिधर वी मर्द मैदान दा रुख।
ओहदे तीरां ने पाई थरथल ऐसी,
मौम वेंहदी सी ओहदी कमान दा रुख।
जिधर जिधर वी घोड़े नूँ मोड़दा सी,
उधर मुड़दा सी जंगी तूफान दा रुख।
जिधर जान बचा के जाए बाबर.
उधर पल्ट जाँदा ओहदे जान दा रुख।
हरावल दस्तयां नाल फिर आन वदया,
राय सैन करदा मारो मार अग्गे।
रायो समझया फतह पई नचदी ऐ,
राजपूत दी तेज़ तलवार अग्गे।

(18)

रोना रिहा ए मुड तों हिन्दियां नूं,
देंदे रिहे ने यार नूँ यार धोखा।
मानक रायो चौहान ने किहा आ के,
होयेआ असां दे नाल सरकार धोखा।
दे गया ए कौम नूँ वक्त उत्ते,
राय सैन मक्कार गद्दार धोखा।
मारे गये आं राणा फरेब खा के,
बदले जित दे होइ ए हार धोखा।
गल सुन्दियां राणा नूँ आए चक्कर,
थर २ कम्बिया ओहदा सरीर आके।
बेड़ा ग़र्क गद्दारी ए होए तेरा,
छल छलकिया अखां चों नीर आके।

(19)

हो के डौर भौरा राणे आखया ए,
बोल बोल चौहान की आखया ई।
कीता राजपूताने गद्दार पैदा,
कर बन्द ज़बान की आखया ई।
मनदे कन नहीं मनदा दिल मेरा,
होया बहुत हैरान की आखया ई।
जैचन्द दी अजे वी अन्स बाकी,
बोल बोल जवान की आखया ई।
माड़े दिनां विच अकल वी होए माड़ी,
चल गया गद्दार दा वार राणा।

राय सैन न सुलह दे लई भेजो,
कीता असां पहलाँ खबरदार राणा।

(20)

राणे आखया खाब विच सोचया न,
राजपूत गद्दार वी हो सकदा।
राजपूतनी मां दा दुध पी कें,
कर कोई देस दे नाल धरो सकदा।
तकया अज कुर्बानी दा मुल कोई नहीं,
घातक इक वी कौम डबो सकदा।
राजपूताँ ने देश गुलाम कीता,
ऐस दाग नूं कोई नहीं धो सकदा।
काना होके मोया न जंग अन्दर,
शायद एह वो पाप मैं वेखना सी।
फुट्टी क्यों न दूसरी अक्ख मेरी,
शायद एह वो संताप मैं वेखना सी।

(21)

वज्जे फट चौहान दे दिल अन्दर,
जदों फुटदे राणा दे फट वेखे।
घड़ी घड़ी ते हौकयां नाल ओन्हें,
ओहदे मत्थे दे वट दे वट वेखे।
झल्ली अख दी झाल न जाए झल्ली,
शोले पये बलदे लट लट वेखे।
कदी जख्मां दे अस्सी निशान वेखे,
कदे वज्जी कलेजे दी सट वेखे।

राणे किहा चौहान ए दुख एहो,
वद्द कर के मारे बदनाम ने तीर।
तीर कम नहीं आये एह तीर वजदे,
मारे रज के अज संग्राम ने तीर।

(22)

चौगा पाड़ के राणा ने किहा एदाँ,
मेरे बदन दे अस्सी निशान ने वेख।
फट खाके कदे न सी कीती,
किन्ने फट खाधे मेरी जान ने वेख।
हाये घर दे वैरी नूँ वेखया नहीं,
वैरी लये ने मेरी कमान ने वेख।
एस फट कलेजे नूँ फाड़ दिता,
जेहड़ा ज़ख्म लाया वेईमान ने वेख।
हशर तीक नहीं लभना चैन मैनूँ,
सांगा तड़फदा जग तों जान लग्गा।
एस ज़ख्म दा कोई इलाज है नहीं,
जेहड़ा ज़ख्म अकासिवां आन लग्गा।

(23)

ओ देख चौहान ने किहा राणा,
राये सैन दी ज़रा ते शान नूँ वेख।
तुरया आऊंदा ए बाबर दे नाल किहां,
अक्खाँ खोल गद्दार दे मान नूँ वेख।
राणे किहा चौहान इक तीर बाकी,
कित्थे पई ए ज़रा कमान नूँ वेख।

कह मौत नूं घड़ी ते ठहर जावे,
चलन लगा संग्राम दे बान नूं वेख।
सांगे उठ के जदों कमान खिच्ची,
लैके मौत दा तीर पैगाम तुरया।
लत्था सिर गद्दार दा धड़ उत्तों,
पापी मर के मौत हराम तुरया।

(24)

जेहड़ा यार नूँ मारे ओह मरे पहलाँ,
क्यों जग उत्ते यार मार जीवे।
वध के ऐस तों कौमी अपमान की ए,
जेकर जग दे विच गद्दार जीवे।
कदे फेर वी वैरी नूँ वेख लां गे,
अन्स असां दी विच संसार जीवे।
मर्द लीकदा नवें फसानयां नूँ,
भावें जग उत्ते घड़ियां चार जीवे।
राये सैन गद्दार जो फट लाया,
ओहदा ज़ख्म नहीं कदेवी भर सकदा।
जम्मन जग दे मर्द मैदान लक्खां,
कोई वी रीस नहीं सांगे दी कर सकदा।

— —

अनखी मर्द

(1)

जेहड़े पले ने तेग दी धार थल्ले,
खाँदे ओह नहीं कदे तलवार दा डर।
मर्द नच के मौत नूँ मंग लैंदे,
मनदे मर्द नहीं कदे वंगार दा डर।
घोड़ी अनख दी उत्ते सवार होके,
मर्द लहू दे नाल शंगारदा डर।
खेढ सिरां दे जिन्हाँ नें खेढदे ने,
हुन्दा उन्हां नूँ कदे नहीं हार दा डर।
सदा मुंह वखालनी सीस दे के,
मर्द मौत दे सीस तों वारदा डर।
दुनियां विचों मर्दानगी मुक जांदी,
जे कर मर्द नं मौत दा मारदा डर।

(2)

मर्द रब दी नहीं परबाह करदा,
जदों हिक मैदान विच तान दैंदा।
जद तक ओस दे धड़ ते सिर रहिंदा,
झुल्लन कदे नहीं कोई तूफान दैंदा।
बन जाँदा ए पुंज कुर्बानियां दा,
अनख आन नहीं होन कुर्बान दैंदा।
दे दैंदा ए जान मैदान अन्दर,
एपर वैरी नु सुक्का नहीं जान दैंदा।

सदा मर्द दी मार तों खौफ खाके,
दर ते मर्द दे हथ पसारदा डर।
दुनियां विचों......

(3)

वड्ढी जावे ते जावे हज़ार वारी,
नींवीं हुन्दी नहीं कदे वी मर्द दी धौन।
हिम्मत, जोश इरादे, जवानमर्दी,
गीत सदा ई मर्द अनखीले दे गौन।
आन, मान, गुमान ते शान चारे,
मगर मगर ई मर्द मैदान दे भौन।
मौत, झखड़, प्रलै, तूफान चारे,
नच के मर्द दे सदा इशारे ते औन।
मर्दा मर्दा वी मर्द मैदान जंगी,
नहीं खाब दे विच चितारदा डर।
दुनियां विचों......

(4)

विना पीतयों सदा बदमस्त लभ्भे,
चढ़या मर्द नूं सदा ई रंग रहिंदा।
बलदी शमाँ ते नच के बलन खातर,
कफ्फन बन्ह के वांग पतंग रहिंदा।
सीस रख के अपना तली उत्ते,
लड़दा नाल तकदीर दे जंग रहिंदा।
लै के मौत नुं अपनी बगल अन्दर,
नचदा सदा तूफानां दे संग रहिंदा।

गान्ने बन्हदे जेहड़े मर्दानगी दे,

मनदे कदे नहीं किसे सरकार दा डर।

दुनियां विचों......

(5)

रख के घोडा ज़माने दी धौन उत्ते,

मर्द नवियां लकीरां ई लीकदे ने।

सद्दे जदों तूफाना नूं ऐह देंदे,

धुरे आन के धरती दे चीक दे ने।

पट्टा पा के काल दे गल अन्दर,

जिधर चाहनदे ने उधर तरीक दे ने।

वेहड़े मौत दे मौत नूं फिरन लभदे,

बह के घर न मौत उडीकदे ने।

जेहड़ा पिठ पिछे छुरियां मार देंदा,

हुन्दा मर्द नूं ओस गद्दार दा डर।

दुनियाँ विचों......

— ::o: —

मेरे वसदे रसदे देश अन्दर

(1)

साडा किसे वी गैर ते गिला कोई नहीं,
साथों लये भ्रावां ने आन बदले,
जै चन्द ने देश नु डोब दित्ता,
गौरी सद के सिरफ चौहान बदले।
छुरी कौम दी हिक ते मार दित्ती.
सिरफ मान गद्दार ने मान बदले।
अपनी गर्ज़ ते फर्ज़ कुर्बान करके,
गन्गू जये मक्कारां ईमान बदले।
भाड़ा सिंह जये भाड़े दे होए टट्टू,
अपनी कौम नु वेच के खान बदले।
मेरे वसदे रसदे देश अन्दर,
नात्थू भेभ्भ के लये भगवान बदले।

(2)

तान्ना होवे आबाद न हिन्दियां दा,
रब्बा मुड तों तेरी तदबीर ही रही।
कफ़न असाँ न सिरां तों कदे खोले;
लड़दी असां नाल साडी तकदीर ही रही।
ारे असां न मौत नूं आऊन दित्ता,
साडे सिरां तों चलदी शमशीर ही रही।
वें सानूं ज़माने ने पीस दित्ता,
अनख आन ए साडी जगीर ही रही।

धड़ धड़ असां ने धड़ां दे ढेर लाके;
बन सिरां दे लाके तूफान बदले।
मेरे वसदे रसदे .....

(3)

पी पी खून तूं रजया नहीं भगवन,
असाँ लहू पिलाया ए अत तैनूं।
असां खप्पर बनाके खोपरी दे,
दित्तो बिसमिल अशफाक दी रत्त तैनूं।
लहू दे गये रीझाँ दे नाल अपना,
भगत सिंह सुखदेव ते दत्त तैनूं।
तेरी भुख मिटान लई असां दित्ते,
चन्द्रशेखर तैनूँ लाजपत तैनूं।
लाई अग सुभाष नें सेहरयां नूं,
तेरे दिल दी अग बुझान बदले।
मेरे वसदे रसदे......

(4)

हशर अदम तशदद दे देवते दा,
नंगा कर गया अज भगवान तैनूं।
तेरे घर शराफत दा मुल की ए,
सबे जानदे ने जानी जान तैनूं।
खून अपने भगतां दा सदा पीता,
भले बुरे दी कोई नहीं पछान तैनूं।
चंगे लग्गे न जग ते प्यार वाले,
उच्चे झुलदे होये निशान तैनूं।

नाथू जमयां होनी दी कुख विचों,
कहर हिन्दियां उत्ते कमान बदले।
मेरे वसदे रसदे......

(5)

दसदी पई ए मौत महात्मा दी,
किस्मत विच ने साडी सरकार धक्के।
ओहदी मौत ने देश नूं मार दित्ता,
खांदा पया ए देश प्यार धक्के।
मेरे चमन विच आई बहार जद तों,
माली बुलबुलाँ नूं रिहा मार धक्के।
अपने राज विच वतन पुजारियां नूं,
देंदे पये ने अज गद्दार धक्के।
रब्बा फेर बरबाद नूं दें सद्दे,
साडे खून विच चुब्बियां लान बदले।
मेरे वसदे रसदे देश अन्दर,
नाथू भेज के लये भगवान बदले।

—::o::—

दिल दे दागां दीवालियां बालियां ने

(1)

मेरे बाग विच अज प्रधान भौरे,
मौजाँ विच अय्यारां नूं वेखने आं।
बदले गौन दे बुलबुलां रोंदियां ने,
रोंदे गुल गुलज़ारां नूं वेखने आँ।
चुने गये ने फुल्लां दे फुल आ के,
जोबन विच अज खारां नूं वेखने आं।
सीने पाट के मोरां दे होये लीरां,
लत्थे होये लंगारां नूं वेखने आं।
पाके मोडे ते जाल सय्याद थाँ थां,
निकले होये शकारां नूं वेखने आँ।
दिल दे दागाँ दीवालियाँ बालियां ने,
हर पासे बहाराँ नूं वेखने आं।

(2)

किस्से वतन दी आन ते बान वाले,
गये गुज़रे ज़माने वी याद हो गये।
हद हो गई नाज़ ते नखरहाँ दी,
फैशन नवें तों नवें ईजाद हो गये।
फस के इश्क बे पीर दे गेड़ अन्दर,
सौं रब दी असी बरबाद हो गये।
वाह वाह आया ए दौर आज़ादियां दा,
होये जेहे आज़ाद आज़ाद हो गये।

ग्रसी जित के बाज़ी नूँ हार बैठे,
थाँ थां हाराँ शिगारां नूं वेखने ग्राँ।
दिल दे दागां......

(3)

एदां पीके क्लबां च चवी घण्टे,
भेस बदल के हुसन दे चोर नचदे।
तक के कालियाँ घटां नूँ चमन ग्रन्दर,
मस्त होके जिस तरहां मोर नचदे।
नाज़क बदन मलूक नादान साकी,
ग्राके विच शराब दे लोर नचदे।
लैके वगल विच ग्रल्हड़ जवानियां नूं,
ज़रां वालड़े ज़रां दे ज़ोर नचदे।
धक्के खांदे क्लबां दे विच हर दम,
इक नहीं हज़ाराँ नूं वेखने ग्रां।
दिल दे दागां......

(4)

जद तों हवाई कमाई दा ज़ोर ग्राया,
ताश विच क्लबां दे ग्रत्त नच्चे।
पत्ते विच क्लबां दे जदों नच्चन,
एहदे विच मासूमाँ दी रत्त नच्चे।
पत्ते ताश दे नोट नचान जिस दम,
नोटां नाल मुटयाराँ दा सत नच्चे।
पत्ते ताश दे जदों नचान नारां,
पत्ते २ ते कौम दी पत्त नच्चे।

ग्रज लीडर प्लीडर ते सेवकां नूं,

नचदे नाल मुटयारां दे वेखने ग्रां।
दिल दे दागाँ......

(5)

भारतवर्ष सी देश ग्रनखीलयां दा,

ढोले गौन वाले हुन ते वीर रह गये।
पट सट्टया कौम नूँ पट्टियां ने,

हिजड़े हो के मर्द रणधीर रह गये।
शीशे कंघियाँ सुरखियां ग्रते पौडर,

पुठ्ठे वाल रह गये डिंगे चीर रह गये।
दुनियां पुज गई चन्द ते तारयां ते,

ग्रसी मारदे नैनां दे तीर रह गये।
घड़ी घड़ी ते नर्गिस दा नां लैके,

हौके मारदे याराँ नूं वेखने ग्राँ।

————

फट्टल सानूं प्यार ने जेहा कीता

(1)

कदे बुलबुल दे चॉवां नूं वेखने आँ,
कदे बुलबुल दे प्यारां नु वेखने आं।
लैके वगल विच सरू नूँ इश्क पेचा,
चुमदा पया रुखसारां नूं वेखने आं।
फुल वांग पैमानयाँ वेख खिड़दे,
टैह टैह हसदे खाराँ नूँ वेखने आं।
पत्ती पत्ती ते आया ए नवां जोवन,
हरयां भरयां गुलज़ारां नूं वेखने आं।
कली कली ते रंग ते रूप आया,
नवयाँ हारां शिगारां नूं वेखने आं।
जद तों माली ने बाग विच पैर पाया,
हर पासे वहाराँ नूँ वेखने आं।

(2)

तेरे श्रौन दे उते बहार रानी,
साडे मुख ते आ गयीयाँ लालियां ने।
गान्ने वन के तेरे प्यार वाले,
असां लक्खां जवानियां गालियां ने।
तेरी दीद लई चर्वियां ढाल के ते,
कई वार दीवालियां बालियां ने।
उजड़े चमन नुं फेर आबाद कीता,
उजड़ उजड़ के बाग दे मालियां ने।

तेरी लटक ते लटक गये दार उत्ते,
बिसमिल जेहे हज़ारां नूं वेखने आं।
भगत सिंह दी भक्ति दे अंज सदके;
हर पासे वहारां नूं वेखने आं।

(3)

तेरे वास्ते देश दीवानया ने,
जिंदाँ वांग पर्वानयाँ वारियाँ नी।
तेरे प्यार लई पाके बेड़ियां नूं,
उमरां जेल दे विच गुज़ारियां नी।
काल कोठी विच जाके शफाक दूल्हे,
चांवां नाल तैनूं वाजां मारियां नी।
बड़ा लभया तिलक महाराज तैनुं,
काले पानी विच लाके तारियां नी।
तेरी हर अदा दे विच अड़िये,
जलवा उन्हां सरदाराँ दा वेखने आं।
रंग आँदा ए उन्हां कुर्बानियां ने,
हर पासे बहाराँ नुं वेखने आं।

(4)

चर्चे हो गये तेरे दिवानयां दे,
इस धरती तों लैके असमान तीकर।
चन्द्रशेखर जेहे सिमरदे रहे तैनुं,
अड़िये मौत नुं जफियां पान तीकर।
तेरी भाल दे विच सौदाई होके,
ऊधम सिंह पुज्जा इंग्लिस्तान तीकर।

तेरी दीद खातिर भागां वालिये नी,
कीती मार सुभाष जापान तीकर।
उल्लू बोलन शहीदां दे मढ़ाँ उते,
सुन्ने पये मज़ारां नुँ वेखने ग्रां।
ग्रोथे दौर खिज़ां दा वेखने ग्रां,
एथे ग्रसो बहारां नु वेखने ग्रां।

(5)

जे कर ग्राई एं ग्रा बहार रानी,
फल फुल जवानियां मान ग्रड़िये।
शानाँ वालिए शान बना मुड़ के,
तेरी शान तों ग्रसी कुर्बान ग्रड़िये।
तेरी शान नु होर चमकान खातिर,
रज के ग्रसीं लड़ावांगे जान ग्रड़िये।
रंग लियावना ए ग्राखर कुर्बानियां ने,
उच्चा होना ए हिन्दुस्तान ग्रड़िये।
'वैहशी' ग्रज तरंगे दी छां हेठां,
नक्शे नवें संसारां दे वेखने ग्रां।
सिर सदका बापू दी मेहनता दा,
हर पासे बहारां नूँ वेख ग्रां।

———

मैं ते उन्हां शहीदां नूं पूजनां वां

(1)

सिदक रख के देश दे प्यार सदके,
सदके देश तों देश दे लाल गये ने।
तन के विच मैदान दे मर्द दूल्हे,
हिक्काँ तान तूफानां नूं टाल गये ने।
सड़ के वांग पर्वानियां देश खातिर,
भाँबड़ अनख ते आन दे बाल गये ने।
गान्ने बन्ह के देश प्यार खातिर,
अंग कौम दे प्यार दा पाल गये ने।
उछल उछल के दारां दे तख्तयाँ ते,
जज़बे कौम दे खूब उछाल गये ने।
मैं ते उन्हां शहीदां नूं पूजना वां,
जिऊना कौम नूं जेहड़े सिखाल गये ने।

(2)

हुकम मौत दा जदों इश्फाक सुनया,
मिट्टी देश दी नाल प्यार चुम्मी।
लहरी लहर विच आ गया मरन लगयाँ,
काल कोठी दी हर इक दीवार चुम्मी।
रोशन नच के फांसी ते जदों चढ़या,
पैरीं पई ज़ंजीर सौ वार चुम्मी।
दर्शन हीर आज़ादी दे पान खातिर,
जफ्फी पाके बिसमिल ने दार चुम्मी।

रोशन कर लई शमाँ आज़ादियाँ दी,
खुदी राम जहे चर्बियाँ ढाल गये ने।

(3)

किहा शेरे पञ्जाब ने जाओ साईमन,
साडी मंग वे मंग आज़ादियाँ दी
खफ्फन बन्ह के असां पंजाबियाँ ने,
अन्गी होई ए अन्ग आज़ादियां दी।
सानूं डांगां संगीनां दा रोब काहदा;
लड़नी असाँ ने जंग आज़ादियां दी।
झखड़ सिरां ते साडे हज़ार झुल्लन,
चढ़ी रहू पतंग आज़ादियाँ दी।
मरना देश खातिर हसना मरन वेले,
करके पैदा अनोखी मिसाल गये ने।
मैं ते उन्हां......

(4)

मनज़िर देख के लाला दी मौत वाला,
भगत सिंह सुखदेव ते दत्त निकले।
बदला शेरे पंजाब दा लैन खातर,
कीती जदों अंग्रेज़ ने अत्त निकले।
खून खोलया आन पञ्जाबियाँ दा,
रक्खन लई पञ्जाब दी पत्त निकले।
ज़ख्मी शेर दे वांग खूनखार होके,
पीन लई अंग्रेज दी रत्त निकले।
सतलुज अज वी उन्हांदे गीत गाँदा,
कर के मां दा दुध हलाल गये ने।
मैं ते उन्हां......

(5)

जलयाँ वाले 'च गोलियाँ मार के ते,
कीता खून एडवायर ने गर्म साडा।
गया बच के निकल शैतान पापी,
रिहा दिल विच दिल दा वर्म साडा।
जदों किदे इंग्लैंड विच गजदा सी.
सिर झुकदा सी नाल शर्म साडा।
ऊधम सिंह ने लंडन दे विच दसया,
बदला वैरी तों लैना एं धर्म साडा।
चन्द्रशेखर जेहे मौत दे गीत गौं के,
वैरी मौत दी नींद सुवाल गये ने।
मैं ते उन्हां......

(6)

हिन्दी कदों सुभाष नूं भुल सकदा,
जिहदी उन्गल ते जर्मन जापान नचया।
जय हिन्द दे नारयां नाल गजदा,
बन के अमफल दे विच तूफान नचया।
ओहदे इक इशारे ते देश खातिर,
बच्चा बुड्ढा जवान नादान नचयाँ।
हिक्कां तान बम्बारां दी छाँ हेठाँ,
भारतवर्ष दा मर्द मैदान नचया।
खून दे के देश दे प्यार खातिर,
साडी अनख नूं जेहड़े नवाल गये ने।
मैं ते उन्हां......

(7)

दे के सबक अहिंसा ते शान्ति दा,
बख्शी प्रेम दी गांधी जागीर सानूं।
जीवन वार के देश दे प्यार खातिर,
जीवन दे गया कौमी फकीर सानूं।
अट्ठों पहर तसव्वर दे विच भौंदा,
भुलदी कदे नहीं ओहदी तसवीर सानूँ।
एह मुल ए ओहदी कुर्बानियां दा,
दर्शन दित्ते आज़ादी दी हीर सानूं।
स्यासतदान पटेल तों जां सदके,
मर्दे मर्दे वी वक्त सम्भाल गये ने।
मैं ते उन्हां......
उच्चा कीता ए जिन्हां निशान साडा,
सानूं मान ए उन्हाँ दुलारयां ते।
तिन रंगे तिरंगे निशान सोह्ने,
साडे चर्चे ने अम्बर ते तारयाँ ते।
राखा तूं एं अमन ते शान्ति दा,
अमन नचदा तेरे इशारयां ते।
जद तक जिस्म दे विच ए जान साडी,
झुलदा रहेंगा अर्श मनारयां ते।
झंडे झुलदे नाल शहीदियां दे,
भारतवर्ष दे लाल वखाल गये ने।
मैं ते उन्हां......

———

(1)

फट्टल सानूं बहारां ने जिहा कीता

सावन कीरने पाके जदों रोंदा,
नचदे मोरां गुवारां नूं वेखने आं।
शबनम फुल्लां दे हशर ते जदों रोंदी,
हसदे भौर अय्यारां नूं वेखने आं।
नज़रां विच फिर बिजलयां भौंदियां ने,
जदों मस्त फुहारों नूं वेखने आँ।
दुश्मन रही ए बहार दिवानियां दी,
लत्थे होये लंगारां नूं वेखने आँ।
जदों छेड़दा प्रेम सितार भौरा,
टुटियां दिलाँ दियां तारां नूं वेखने आं।
फट्टल सानूं बहारां ने जिहा कीता,
हर पासे बहारां नूं वेखने आं।

(2)

थां थां बेवफाईयां दे जय उत्ते,
खिलरे होये खिलारां नूं वेखने आं।
आने अड्डे दे नर्गिस दे दीद खातिर,
कद तों एस नज़ारे नूं वेखने आं।
लक्खां दाग जुदाईयां दे लई फिरदा,
कद तों फुल हज़ारे नूं वेखने आं।
पब्बां भार हो किसे नूं टोलदा ए,
कद तों सरू वेचारे नूं वेखने आं।

वेंहदे असी नहीं दिल दीयाँ धड़कनां नूँ,
फोके हाराँ शिंगारां नूँ वेखने आं
फट्टल सानुँ......

(3)

दुख दर्द ते नाले मुसीबतां दे,
मारे रात नूँ तड़फदे वेखने आँ
काली रात जुदाईयाँ दी जदों औंदी,
सारे रात नूँ तड़फदे वेखने आँ
चकवा, चंद, चकोर ते चान वाला,
चारे रात नूँ तड़फदे वेखने आं
नीले अम्बर दे उत्ते बेचैन हो के,
तारे रात नूं तड़फदे वेखने आं।
विल्क विल्क के मोए जहान अन्दर,
इक नहीं हज़ारां नूँ वेखने आं।
फट्टल सानूं......

(4)

सुम्बल ज़ुल्फ खिलार के शौक सेती,
पई एह डीकदी किसे दी राह तत्ती।
लज किसे दी ढक के लाजवन्ती,
बैठी होई ए डक के साह तत्ती।
कद तों बैठी कुवारी कुवार गन्दल.
गल विच पा के प्रेम दा फाह तत्ती।
रानी रात दी सेज़ वछा रक्खे,
दिल विच घुट के दिल दी चाह तत्ती।

लुच्ची दुनियां नहीं किसे नूं रास आई,
हर थां रोंदे लाचाराँ नूं वेखने आं।
फट्टल सानूं......

(5)

पाया फैज़ बहार तों की कलियाँ,
पुच्छो हाल न एहनां बेचारियां दा।
किह्यां कीड़ियां काडयां मक्खियां ने,
रस चूसया एहनाँ कुवारियां दा।
लुट के लै गया सोल जवानियां नूं,
भौरा गुरू घंटाल शिकारियां दा।
टगे टगे बाज़ार विच मालनां ने,
जोबन वेचया एहनां प्यारियाँ दा।
चुने जाँदे ने फुल फिर सद्दरां दे,
जदों फुल्लां दे हारां नूं वेखने आं।
फट्टल सानूं......

(6)

अन्नी वेख के पई दी बाग अन्दर,
सीते बुलबुल बेचारी दे बुल रह गये।
अत्त वेख के लोभियां भौरयाँ दी,
दीवे सद्दरां दे होके गुल रह गये।
हसरत रह गई दिल दी दिल अन्दर,
जज़बे दिल अन्दर डक्के कुल रह गये।

लाशे रह गये कलियां कुआरियां दे,
या ते चमन विच फुल्लां दे फुल रह गये।
फ़ोकी दुनियां ते एदाँ प्यार फोका,
हर थां फोके प्याराँ नूं वेखने आं।
फट्टल सानूं बहारां ने जेहा कीता,
हर पासे बहाराँ नूं वेखने आं।

मनदा रिहा ए तेग नूं सदा हिन्दी

(1)

मुड्डों रही नचाँवदी तेग सानूं,
ग्रादत रही ए सानुं नचान दी तेग।
ग्रसी तेग दे वेग नुं जानने ग्रां,
साडी तेग दे वेग नुं जानदी तेग।
ग्रसी तेग दी धार पछानने ग्राँ,
साडे लहू दी धार फछानदी तेग।
तेग नाल जवानी एं ग्रसां मानी,
साडे नाल जवानियां मानदी तेग।
हानी तेग दे रहे हां ग्रसी मुड्डों,
साडे नाल खेडी साडे हान दी तेग।
मनदा रिहा ए तेग नुं सदा हिन्दी,
मन्नी गई ए हिन्दुस्तान दी तेग।

(2)

जम्मे कदे नहीं रुए ज़मीन उते,
भारतवर्ष जेहे मर्द रणधीर किधरे।
लक्खां नारियां देश लई सती होईयां,
दुनियाँ विच न मिले नज़ीर किधरे।
बिना हिन्द दे खफ्फन लपेट के ते,
वाही बच्चयां नहीं शमशीर किधरे।
मेरे देश दे बिना संसार ग्रन्दर,
सिरां बाहज नहीं लड़े सरीर किधरे।
फट मारना जान दा सदा हिन्दी,
वाही एने नहीं कदे ज़बान दी तेग।
मनदा रिहा......

(3)

हिन्दी मौत नाल खेडना जानदा ए,
कुच्छड़ चुक के मौत खिडाए हिन्दी।
हिन्दी कदे वी मौत तों यरकया नहीं,
अग्गे मौत नु ला यरकाए हिन्दी।
सेहरे बन्ह के वाजयां गाजयाँ थीं,
वाजां मार के मौत बुलाए हिन्दी।
गान्ने बन्ह के अनख ते आन वाले,
सदा मौत नु जफ्फीयां पाए हिन्दी।
खफ्फन बन्ह के वेख लये कोई बेशक,
जिन्नूँ लोड़ वे साडी अज़मान दी तेग।
मनदा रिहा......

(4)

वर्क वर्क इतिहास दा पया बोले,
भातरवर्ष शहीदां दी खान है वे।
साडी तान नु तान कोई हिंक वेखे,
साडी हिक हिमाला दी तान है वे।
निरे पुरे नहीं अमन दे असी हामी,
साडे जज़बयाँ विच तूफान है ने।
साडे डौलयाँ सदा झुकाई दुनिया,
सानु अपने ज़ोर ते मान है वे।
जेकर वेखना चांहुदा कोई ज़ोर साडा,
फेर चलेगो हिन्दी जवान दी तेग।
मनदा रिहा......

(5)

करना चांह्दा ए जिदां अखीर कोई,
एदां नाल ए मर्ज़ी अखीर साडी।
दब दयांगे दयेगा जो दाब्बे,
दब नहीं सकदी कदी ज़मीर साडी।
चलदी रही ए देश दे मान खातिर,
चलदी रहेगी सदा शमशीर साडी।
अनख रही ए सदा ज़ागीर साडी,
अनख रहेगी सदा जागीर साडी।
जे कर किसे खड़काई ते खड़क जाऊ,
सानुं जाच ए फेर खड़कान दी तेग।
मनदा रिहा......

पुत जिन्हां दे मर जान सोहने

(2)

मर जाएं उड बुनेरे उत्तों कां कां कर न मर जायें कावां।
दिल विच मेरे बलन मुआते बल बल उठुन सीने हावां।
मैं बैठी आं पल्ले पाके घर विच मेरे वज्जन ढावां।
मर गये लाड़े सने सिरबाले नाल मौत दे लै के लावाँ।
कां कां सुन के तेरी रोवां पिट पिट नीली हुन्दी जावां।
पुत जिन्हांदे मर जान सोहने किद्दां जींवन दस ओह मांवां।

(2)

किद्दां कांवाँ चूरी पावाँ चूरी वांगूं कुटी गई आं।
मेरे भा दा हनेर पया ए सिकल दुपहरे लुटी गई आँ।
खा खा रोले विच मुसीबत भोह दे वांगूं कुटी गई आँ।
मैं स्वर्गां दी रानी है सां नर्कां दे विच सुटी गई आँ।
रहन दुआले हर दम मेरे लक्खां अठो पहर बलावाँ।
पुत जिन्हांदे ...

(3)

छल के वाँग छलेडे तुर गये दिल मेरे ते पाके छाले।
छम छम कर के छल छल छलकन हरदम मेरे नैन प्याले।
फिर २ लभ्भां चार चुफेरे लभदे नहीं ओह पुत मतवाले।
लभदे नहीं ओह मक्खन मेरे जेहड़े खुआके मक्खन पाले।
दीदे तरसन दीदां खातिर दीद लई मैं पई कुरलावां।
पुत जिन्हाँदे ...

(4)

पुत बहाले शीयां वरगे आप मौत दे खारे मैं ते।

सेहरे बन्ह के आप शिंगारे सोहने पुत प्यारे मैं ते।
गान्ने बन्ह के ढुक्कन घल्ले पुत्र मौत द्वारे मैं ते।
हीर आज़ादी खातिर अड़या लक्खाँ रांझे वारे मैं ते।
दिल दी दुनियां लुटी गई ए किद्दां दिल नुं मैं परचावां।
पुत जिन्हां दे......

(5)

झल वलल्ली जेलीं जाके पुत्र पुत्र पई पुकारां।
चुम चुम रस्से हो गई कमली मुंहों कुझ नहीं बोलन दारां।
पुच्छां नित मसानां कोलों मैं पुत्तां दियाँ जाके सारां।
उठ उठ वांग सौदाईयां हरदम मैं कबरां नूं जफ्फे माराँ।
हर दम रो रो नैनाँ विचों गंगा जमना पई वगावां।
पुत जिन्हां दे......

(6)

मेरे पुत्रां लहू विच नहाके कौल मेरे नुं दित्ता पाल।
हीर आज़ादी नुं साँ मंगदी पुत रांझया आंदी भाल।
फेरे लैके पाये न फेरे इक वी अज़ तक मेरे लाल।
नाल कहारां आ गई डौली कोई न आया डोली नाल।
पुत समझ के जफ्फे मारां जित्थे लभ्भे कोई परछावां।
पुत जिन्हां दे......

(7)

सतलुज कंढे अजतक लभन लट २ बलदियां लाटाँ अड़या।
ऊधम सिंह जद चेते आउंदा दिल विच पैन तराटां अड़या।

ऐस गल्लों मैं घटदी जावाँ पुत्र पा गये घाटाँ अड़या।
अम्फल विच इक लाल गुवाचा अज तक वाटां २ अड़या।
जी विच आऊंदा पंछी बन के ओनूं किधरों लभ लियावां।
पुत जिन्हां ने......

(8)

आ जाए किधरों पुत्र कमला दिल विच कावां एहो आवे।
हरदम मैनुं खाबां अन्दर सोहने पुत दे पैन भुलावे।
इक वारी ते अम्माँ कह के मेरा पुत्र आन बुलावे।
चुम्मां चट्टां सीने लावां चुक लवां ओहनुं विच कलावे।
ओहदे सिर ते ताज सजा के छन्ने भर २ दुध पिलावां।
पुत चिन्हां दे......

पंजाबी

(1)

खफ्फन बन्ह के सिरां ते देश खातिर,
सदा मानया मान पंजाबियाँ ने।
लाके जिंद जवानी नुं दा उत्ते,
कीता देश जवान पंजाबियाँ ने।
रंगन वास्ते कौम दी वीरता नुं,
कीती जान कुर्बान पंजाबियां ने।
पाये भंगड़े मौत दो गली अन्दर,
सदा मर्द मैदान पंजाबियाँ ने।
डक्के मारके अनख ते आन वाले,
डक्के सदा तूफान पंजाबियां ने।
जदों कदे वी देश ते आई औकड़,
रखी तली ते जान पंजाबियां ने।

(2)

सदा मौत महबूब दे नाल अज तक,
यारी पाली ए यार पंजाबियां ने।
नच्ची मौत मैदान विच जदों आके,
खादी तदों ई खार पंजाबियां ने।
मौत नितरी जदों मैदान अन्दर,
दित्ती अनख नितार पंजाबियां ने।
होये सिरां दे वारने जदों आ के,
आऊन दित्ती नहीं वार पंजाबियां ने।

पा के भंगड़े तेग दी धारे उत्ते,
वरी मौत सरदार पंज़ाबियां ने।
लै के मौत गलोखड़ी विच अपनी,
कीता सदा प्यार पंजाबियां ने।

(3)

जदों कदों वी जंग दे ढोल वज्जे,
लड़ी गह के जंग पंजाबियां ने।
बदले लाल गुलाल दे लहू सेती,
होली खेढी निशंग पंजाबियाँ ने।
गान्ने बन्ह के अनख दे खारयां ते,
मंगी मौत दी मंग पंजाबियां ने।
अंग अंग कटवा के देश खातिर,
सदा पालया अंग पंजाबियां ने।
रंग के देश प्यार नूँ लहू अन्दर,
दित्ता कौम नूं रंग पंजाबियां ने।
सदा मुंह वखालनी सीस दे के,
लाई मौत दी संग पंजाबियां ने।

(4)

फन्ने खां ते वड्डयाँ नाडुआं दा,
सदा भनया लक पंजाबियां ने।
तेग सुति जदों मैदान अन्दर,
लया मौत नूं फ़क पंजाबियाँ ने।
वाह वाह फैसले तेग दी धार उत्ते,
कीते सदा दो टक पंजाबियाँ ने।

उट्ठे जदों तूफान तूफान बन गये,
खादा कदे न झक पंजाबियाँ ने।
हशर तीक वी ओस नूं बख्शया न,
रखी जिदे ते तक पंजाबियां ने।
वैरी मूलियां वाँगरां टुक दित्ते,
जिधर रखया टक पंजाबियां ने।

(5)

पिच्छे परत के जंगी मैदान अन्दर,
तकया कदे नहीं शेर पंजाबियां ने।
भा जा के मौत बाज़ार अन्दर,
पुछया सदा दलेर पंजाबियां ने।
तेग जदों हनेरी दे वांग झुल्ली,
पाया तदों हनेर पंजाबियां ने।
जिन्दां वार के वांग परवानयां दे,
कीता मौत नूँ ज़ेर पंजाबियां ने।
कौमी मंग ते तेग खड़कान लगयां,
लाई कदे न देर पंजाबियां ने।
घेरा पा के मौत दी जू अन्दर,
लया मौत नूँ घेर पंजाबियां ने।

(6)

फट फुट बेपीर ने जदों मारे,
फुट गई तकदीर पञ्जाबियाँ दी।
चक्कर दूई द्वेष ने जेहा दिता,
विकी आन ज़मीर पञ्जाबियां दी।

मार सुटया फौकियाँ चौधरां ने,
अखाँ विच वे नीर पंजाबियां दा।
पा के दाना स्यासी लुटेरयां ने,
मिट्टी बाली आखोर पञ्जाबियां दी।
जेहड़ी बख्शी सी नानक ने प्रेम वाली
लुटी गई जागीर पञ्जाबियां दी।
अज पाक पञ्जाब दे हलक उत्ते,
चलदी पई शमशीर पञ्जाबियां दी।

(7)

मुड़ के जोअन ते आऊ पञ्जाब मेरा,
होया ख्वाब ख्वाब पञ्जाबियां दा।
घेरा पाके फुट दे भौरयाँ ने,
लुट लया शबाब पञ्जाबियां दा।
सड़ के वैर विरोध दी अग अन्दर,
सीना होया कबाब पञ्जाबियां दा।
दाना सुट के फुट दा आगुआं ने,
कीता खाना खराब पञ्जाबियां दा।
हुन्दा जाँदा ए रोज़ बरोज़ हुन ते,
मन्दा हाल जनाब पञ्जाबियां दा।
बलदा पया शमशान दे वांग 'वैहशी'
अज ते सोहना पंजाब पंजाबियां दा।

(8)

धक्का खादा ए जेहा पञ्जाबियां ने,
पये रुल ने अज पञ्जाबियां दे।

नारे बाज़ियां ते गुन्डे गरदियाँ ने,
सीते बुल ने अज पञ्जाबियां दे।
थां थां ते ठोकरां पैदियां ने,
ठुडे मुल ने अज पञ्जाबियाँ दे।
हनेर पाया ए भूठियां चौधराँ ने,
दीवे गुल ने अज पञ्जाबियां दे।
लाके अग पञ्जाब दे मालियाँ ने,
चुने फुल ने अज पञ्जाबियां दे।
भुग्गे लभदे ने चोड़ चुपट 'वेहशी'
बिलकुल ने अज पञ्जाबियां दे।

ज़िंदा रहेगा नां पंजाबियां दा

(1)

मेरा देश पन्जाब ए अनखियां दा,
मन्नी होई ए आन पन्जाबियां दी ।
कोई नहीं हमसरी जगते कर सकदा,
शेर मर्द जवान पन्जाबियाँ दी ।
ओहने अनख दी हद नूँ तोड़ दित्ता,
लग्गी जिन्नु वी पान पन्जाबियाँ दी ।
कोई नहीं रूहे ज़मीन दी जंग ऐसी,
जित्थे लड़ी नहीं जान पन्जाबियां दी ।
तद तक देश नहीं मेरा कमान होया,
जद तक रही कमान पन्जाबियाँ दी ।
तद तक रहेगा अनख दा नाँ कायम,
ज़िंदा रहेगी शान पंजाबियाँ दी ।

(6)

आन बान ते देश दी शान खातिर,
जान तली ते सदा ई रखी ए तूं ।
सदा खेडयां तेग दी धार उत्ते,
मौत कोलों चराई न अखी ए तूँ ।
हिक्कां डाह के डक्के तूफान लखां,
मोड़ीं कदे न सोहनया वख्खी ए तूँ ।
तेरी अनख तों अनखिया जां सदके,
बैहन दिती न नक ते मक्खी ए तूं ।

तन नहीं सकया किसेमैदान अन्दर,
तक्की जिन्ने वी तान पन्जाबियां दी।
जदतक रहेगा ज़मीन असमान कायम,
ज़िंदा रहेगी शान पन्जाबियां दी।

(3)

बन के शेर सरहद दा शेर मर्दा,
जीवन मोह नूं सदा बछोड़या तूं।
नित्तर नित्तर के जंगी मैदान अन्दर;
नाता मौत नाल जंगिया जोड़या तूं।
धनी तेग दे तैनूं एह मान हैवे,
वड्डा मान सिकन्दर दा तोड़या तूं।
तेरी तेग दे वेग तों जां सदके,
मुँह पिछां सलोकस दा मोड़या तूं।
करदी आई ए पैदा शहीद हर दम,
शहीदां वालड़ी खान पन्जाबियां दी।
जद तक रहेगी मर्द दी शान कायम,
ज़िंदा रहेगी शान पन्जाबियां दी।

(4)

बाबा नानक वी एथे अवतार लैके,
गीत प्रेम प्यार दे गा गये ने।
एथे तत्तियां तवीयो ते शौक सेती,
अर्जुन देव समाधियां ला गये ने।
एथे सीस नूं रख के तले उत्ते,
नौमें गुरू जी सीस कटा गये ने।

अनखी गुरू दशमेश दे लाल चारे,
एथे जिंदड़ी घोल घमा गये ने।
मलक फलक चमकोर दे गाऊन किस्से,
चमकी खूब करपान पन्जाबियां दी।
सदके जावां दशमेश दी शान उत्तों;
ज़िंदा रहेगी शान पन्जाबियां दी।

(5)

ईन मेरे पन्जाब दी सदा मन्नी,
आकड़ खाँ दिलावराँ खानियां ने।
एथे नलवे जेहे मर्द अनखेलयां ने,
दसियां नच के खूब जवानियां ने।
एथे शेर रंजीत ने शेर बन के,
शेरां वांग जवानियाँ मानियां ने।
एथे कौम दी मंग ते वीर योद्धे,
शाम सिंह ने छातियां तानियां ने।
भारतवर्ष दे शेर ने एह दूल्हे,
मनदे धाक पठान पन्जाबियां दी।
मुंहों बोल के साडी तवारीख आखे,
ज़िदा रहेगी शान पन्जाबियाँ दी।

(6)

कहना कौमी पतंगया कीह तेरा,
जिंदां देश तों सदा ई घोलियाँ तूं।
सड़न लई आज़ादी दी शमाँ उत्ते,
बन्ह्यिां वांग परवानयां टोलियां तूं।

जलयांवाले दे खूनी मैदान अंदर,
आपे लहू नांल खेडियां होलीयां ने।
तेरे उतों सदकड़े अनख जावे,
पाईयां नच के दारां ते बोलियां ने।
वक्त फेर पुकार के पया आखे,
गुड्डी चढ़ू असमान पन्जाबियां दी।
हुन वी 'वैहशी' आज़ादी दे दौर अंदर,
ज़िंदा रहेगी शान पन्जाबियां दी।

डल्हौज़ी

(1)

नी डल्हौज़िए हुसन दिए रानिये नी,
हुसन तेरे ते बे हिसाब अड़िये।
तेरे कदमाँ ते करन पहाड़ सजदे,
तक तक के तेरा शबाब अड़िये।
चरण चुमदे फिरन बदमस्त सोमे,
तेरे हुसन दी पीके शराब अड़िये।
टुकड़ा जन्नत दा बे नजीर बाँका,
हो नहीं सकदा तेरा जवाब अड़िये।
तेरे दर ते आया वाँ भाग भरिये,
दिल विच लै के इक उमंग एथे।
सड़न वास्ते शमां आज़ादियां ते,
मेरे वतन दे आए पतंग एथे।

(2)

ऐथे जोबन जवानी दी लै अन्दर,
कोई मौज उड़ान नूं आ जांदा।
होके मरज़ दे कोलों मरीज़ औखा,
कोई जान बचान नूं आ जांदा।
होके गमां दे विच ज़हीर बिल्कुल,
कोई दिल प्रचाण नूं आ जांदा।
मैह पी के प्रेम प्यार वाली,
कोई लभ्भन भगवान नूं आ जांदा।

कोई प्रेम प्यार दे गीत गौं के,
नींह प्रेम प्यार दी धरन आऊंदा।
कोई दिलदे हत्थों मजबूर होके,
दर्शन शहीद आजीत दे करन आऊंदा।

(3)

भारत मां ने कीता सी कल पैदा,
स्यासत विच कमाल दा इक बांका।
मर्ज़ सहेड़ के वतन प्यार वाली,
दारू आया सी भालदा इक बाँकां।
पन्ज पुले ते लम्मीयां तान सुत्ता,
ओसे शेर दे नाल दा इक बांका।
सिक्खन आया सी तेरे तों कोई जादू,
जादूगिर बंगाल दा इक बांका।
ओहनूं हीर आज़ादी दी आई चेते,
वेखी ओस ने जदों तसवीर तेरी।
रोक सकी न ओसदे जज़बयां नूं,
जादूगिरनिये ज़ुल्फ ज़ंजीर तेरी।

(4)

धक्के मारके तेरे चुबारयां नूं,
सारे छड के अंग ते साक टुरया।
भारत मां दे भाग चमकान खातिर,
चुम चुम के वतन दी खाक टुरया।
खफ्फन बन्ह आज़ादी दी भाल अंदर,
वाजां मौत नूं मार बेबाक टुरया!
गान्ना बन्ह के अनख ते आन वाला,

लभ्भन हीर आज़ादी नूं चाक टुरया ।

छाती शेर जवान ने जदों तानो,

दुनियां विच इक नवां भुचाल आया ।

डोला लै के आया आज़ादियां दा,

ऐपर आप न डोली दे नाल आया ।

(5)

जिस मिट्टी ते पये ने पैर ओहदे,

ओस मिट्टी दा वन के गुलाम आयाँ ।

कीह किहा सी ओसने जान लगयां,

सुनन वास्ते तेथों पैगाम आयां ।

कासा लैके वतन प्यार वाला,

पीन वतनप्रस्ती दे जाम आयाँ ।

जेहड़ी धरती ते पये ने चरण ओहदे,

ओस धरती नूं करन सलाम आया ।

भारत मां पई ओस नूं टोलदी ए,

कित्थे गया ओह कौमी पतंग अड़िये ।

संग न तूं वैहशी भेत दे दे

तेरे नाल सी ओसदा संग अड़िये ।

———

एह मन्ज़िल ए सब तों औखी

(1)

वतन पुजारी जग दे अन्दर खौफ कदे न मौतों खावे ।
लाके लहू दी पान हमेशा अनख आन नूँ एह चमकावे ।
कौम जदों कुर्बानी मंगे जिंद ;जवानी दाते लावे ।
तेगां उत्ते भंगड़ा पाके दारां उत्ते जा मुस्कावे ।
बड़ी उचेरी शान शहीदी एह रुतबा कोई विरला पावे ।
एह मंजल ए सब तों औखी एथे हिम्मत प्यार पुजावे ।

(2)

जद वी आवे दौर तूफानी मर्द मैदानी फर्ज़ पहचाने ।
घोल घमा के जीवन अपना एह अनखीला मरना जाने ।
लहू दियाँ लीकां पाके लोके मर्दा मर्दा नवें फसाने ।
हिक्कां डाके देश दी खातिर मर्दे आये ने देश दिवाने ।
मौत जदों वी सावें लभ्भे हिक्कां डाहके भरन कलावें ।
एह मन्ज़िल ए सब तों औखी एथे हिम्मत प्यार पुजावे ।

(3)

जिद्दाँ सड़े पतंगा आके एदाँ मर्द जवानी लूहवे ।
जिऊं २ ढोल मैदाने खड़कन त्यों २ चढ़े जवानी भुव्वे ।
जंग ज्वाला जद वी भुड़के एह न तक्कन चूड़े सूहवे ।
एहनाँ लई स्वर्गां अन्दर हरदम रहिंदे खुल्ले बूहे ।
सिर दे खोपर अग्गे करदे जद वी होनी जाम पिलावें ।
एह मन्ज़िल......

(4)

वांग हिमाला सीस इन्हांदे कदे झुकायां झुकदे नहीं गे।
जद तक सीस धड़ां ते रहिंदे तेग नचानों रुकदे नहीं गे।
जित्थे जम्मन देश दिवाने देश कदे ओह मुकदे नहीं गे।
मौत इन्हां तों लुकदी फिरदी मौत कोलों ए लुकदे नहींगे।
मर्द मैदानी जग दे अन्दर कुच्छड़ दे विच मौत खडावे।
एह मंज़िल......

(5)

अनख आन लई मरदां आर्यां तूं नहीं कीतो जिंद प्यारी।
हिम्मत कर हुन शेर दलेरा तूं नहीं हिम्मत किधरे हारी।
जिंद लड़ायां बाहजों हिन्दी हो नहीं सकदी किदे उसारी।
मेहनत कर तूं सिद्धा होके देश बना लै देश पुजारी।
अज वे देश दिवाना आईयों भारत दी जो शान बनावे।
एह मन्ज़िल ए सब तों औखी एथे हिम्मत प्यार पुजावे।



हिम्मत नाल याराना तेरा

(1)

हिन्दी वीरा देश बना लै एह ने चन निशाने तेरे।
खोपरियां दे कासे अन्दर पी गये वीर दिवाने तेरे।
दारां ते वी नाच वखाले वेखे रंग ज़माने तेरे।
हर महफल दे अन्दर मर्दा छलके अनख पैमाने तेरे।
मारें जदों निशाने उत्ते वज्जन तीर ठकाने तेरे।
हिम्मत नाल याराना तेरा कीह कहना मर्दाने तेरे।

(2)

प्रेम पुजारी बन के सच्चा इक लड़ी विच देश परो जा।
रख भरोसा अपने उत्ते पैरां उते आप खलो जा।
छड के वैर विरोधी टैंटे तूं हिन्दी एं हिन्दी हो जा।
जान लड़ा के भारत खातिर दाग गुलामी वाले धो जा।
हुन्दे रहे सौदागर बाँके सिरयां नाल ब्याने तेरे।
हिम्मत नाल......

(3)

हिम्मत कर तूं शेर दलेरा हिम्मत ई तकदीर बनेगी।
जान लड़ा दे भारत खातिर हिम्मत ई तदबीर बनेगी।
जेहड़ी विच तसव्वर तेरे हिम्मत ई तसवीर बनेगी।
हिम्मद नाल वसीले बनदे हिम्मत तेरी हीर बनेगी।
जित्थे तेगां नाच वखालन ओह ने चन्न मल्खाने तेरे।
हिम्मत नाल......

(4)

कदम मिला के तुर खाँ हिन्दी जे तं भाग बनाने चन्ना।
नाल पहाड़ां जफ्फे लाके डौले तूं अज़माने चन्ना।
हिक्कां तान तूफानां अन्दर जोहर अज वखाने चन्ना।
तूं भारत दी धरती उत्ते तारे अज चमकाने चन्ना।
जद तूं वरन शहीदी तुरयों मौत ने खोले गान्ने तेरे।
हिम्मत नाल......

(5)

खून पसीना कर लै इक्को देश शिगारे फेर जवानी।
जावे देश सिरां दे उत्ते लवे हुलारे फेर जवानी।
हिम्मत, मेहनत उद्यम सेती अनख नतारे फेर जवानी।
देश तेरे ते जोबन आवे ठाठाँ मारे फेर जवानी।
जिंद जवानी हरदम वारें की कहना मस्ताने तेरे।
हिम्मत नाल......

पट वजाने दोस्ता ने बड़े सुखल्ले

(1)

ऐवें पये ने मारदे जेहड़े वा नूं टल्ले,
तड़ियां पये ने देंवदे जेहड़े गल्ले गल्ले,
बड़कां पये ने मारदे जेहड़े बल्ले बल्ले,
ज़ंग बाज़ां दे नाल ने जिन्हाँ पासे मल्ले,
चक्कर ओदों खानगे जद गये दबल्ले,
पट वजाने दोस्ता ने बड़े सुखल्ले।

(2)

शैह दे उते किसे दी जेहड़ा मुच्छ मनावे,
मोढे उते किसे दी बन्दूक चलावे,
इज़्ज़त अपनी वेच के जो ऐश उड़ांवे,
ढांवां मार आखीर नूं ओह पच्छोतावे,
सट बगानी हस के कोई विरला झल्ले।
पट वजाने दोस्ता ने बड़े सुखल्ले।

(3)

फूंडां मारन जग ते भाई भावें सब्भे,
टिडे सड़दे शमां ते नहीं किधरे लब्भे,
जज़बे देश प्यार दे नहीं रहिंदे दब्बे,
अनखी अनख नितार के घस जांदे गब्भे,
सीस देश तों वारने नहीं कम सख्खले।
पट वजाने दोस्ता ने बड़े सुखल्ले।

(4)

हामी अमन अमान दे ने हिन्दी पक्के,
लावे साडे नाल न कोई इट खड़क्के,
करके अखां नौरिया जेहड़ा सानूं तक्के,
रीझां लालै नच के तलवारां चक्के,
हिन्दी ए कद डोलया तलवारां थल्ले।
पट वजाने दोस्ता ने बड़े सुखल्ले।

(5)

दूल्हे भारत वर्ष दे असीं शेर सदाईये,
जिधर पासा मोड़िये वैरी नूँ खाईये,
मौत बचावे जान नूँ असों जिधर जाईये,
दुनियां सानूँ जानदी साडे लम्बे दाईये,
केहड़ा जग ते जम्मया जेहड़ा सानूँ ठल्ले।
पट वजाने दोस्ता ने बड़े सुखल्ले।

(6)

हिन्दी विच मैदान दे नहीं फर्जों उक्का,
जेहड़े हिन्दी वीर दे कदे डर नहीं ढुक्का,
मुक्का दस्से असां नूं ओ समझो मुक्का,
खै के साडे नाल न कोई जावे सुक्का,
घेरा घेरे आन के पावें मौत दबल्ले।
पट वजाने दोस्ता ने बड़े सुखल्ले।

(7)

सद्दे दिते मौत नूँ असां मार के टारां
पुछ लै मुंहों बोल के कीह आँदियाँ दारां,
दसन साडी वीरता सतलुज दियां धारां,
योद्धे भारतवर्ष दे ने तेज़ कटाराँ,
अनखी अनख नितार के मर जाँदे कल्ले ।
पट वजाने दोस्ता ने बड़े सुखल्ले ।

(8)

रखे दिल विच कदे नहीं असाँ दिलदे साड़े
छेड़े सानूँ आनके जिदे दिन ने माड़े,
खफ्फन बन्ह के ढुकदे रहे हिन्दो लाड़े,
नचदे आए आं मौत नूँ असी चुक तंगाड़े,
बनके रखिया मौत नूं हिन्दी ने पल्ले ।
पट वजाने दोस्ता ने बड़े सुखल्ले ।

(9)

तक लये जंगां छेड़के जिदे विच ए पीरी,
हिन्दी अग दी नाड़ ए नहीं नान खमीरी,
पल विच वैरी दलां दी भौंह जाऊ पम्बीरी,
लड़नी पई ते लड़ांगे असी जंग आखीरी,
पाने आऊंदे 'वैहशिया' सानूं तरथल्ले ।
पट वजाने दोस्ता ने बड़े सुखल्ले ।

———

नच उठांगे तलवारां ते

(1)

मेरा भारत अज तक जिऊंदा ए भाई बलियां ते बलकाराँ ते।
सदा वतन पुजारी बन के ते असाँ भूटे लये ने दारां ते।
असीं तेगां सांवें खेडे आँ हस्से आं सदा कटारां ते।
तोपां दे मुंह वी मोड़े ने सुत्ते आं सदा अंगारां ते।
जे जंग ज्वाला भड़क पई तरना एं उन्हां कटारां ते।
असी भारत मां दे बेटे आँ नच उठांगे तलवारां ते।

(2)

कदे मर्द न गुज्जे रहिंदे ने कदे चन्न लुकायाँ लुकदे नहीं।
भारत दे मर्द मैदानी ऐ कदे हैंकड़ सावें झुकदे नहीं।
जद जंग ज्वाला भड़क पये फिर लड़नों मरनों उकदे नहीं।
एह होनी कोलों डरदे नहीं एह मौत दे कोलों रुकदे नहीं।
जे बिजली कोई वी चमक पई मेरे भारत दे गुलज़ारां ते।
असी भारत......

(3)

जा आख दिओ जंगबाज़ां नूं असीं पीके सुत्ते भंगां नहीं।
असीं अमन पुजारीं पक्के आं पर जंग कोलों वी संगां नहीं।
जे जंग कोई लड़ना चाँहदा ए असी पाईयाँ होईयां वंगां नहीं।
कोई कढ लये ऐस भुलेखे नूं असां लड़ियां होईयां जंगां नहीं?
जिन्नूं चाहवे साँवें आ जावे भारू आं असी हज़ारां ते।
असीं भारत......

(4)

भारत दे शेर दलेरां ने कदे खफ्फन सिर तों खोले नहीं ।
जदों मौत दा गाना बन्ह लइये फिर मुलक अलमौत तों डोले नहीं ।
सानूँ ढोल बजाने आऊंदे ने भई गौने आऊंदे ढोले नहीं ।
असीं विच मैदाने गजने आं कदे लुक के वहिंदे ओहले नहीं ।
जे कदे किसे ने उन्गल कीती भुल भुलेखे यारां ते ।
असीं भारत......

(5)

सदियां रही अज़माएश साडी मर मर के न मुक्के आं ।
लक्खां वारी लाड़े बन के मौत दे वेहड़े ढुक्के आं ।
दस्से सानूं कोई धन्तर फर्ज़ां तों कद उक्कें आँ ।
ला के सब कुज दा दे उते मंज़िल ते पुज चुक्के आं ।
कौम लई हड्डियां चूना करके कीती कली दीवारां ते ।
असीं भारत......

— —

चौकलिलया

(1)

वैराने भा गये जिस नूं चुबारे रास न आये।
सनिछर पै गया जिस नूं सितारे रास न आये।
तूफानी वलवले जिस दे होये तूफान दे आदी।
ओहदी सद्दरां दी बेड़ी नूं किनारे रास न आये।

(2)

एहनां कौमी गद्दारां ने पाये हरदम,
साडियां बेड़ियाँ विच बेशमार वट्टे।
पिट्ठू गैर दे बन के दगेबाज़ां,
लाये कौम नूँ कई हज़ार वट्टे।
साडयां सिरां दे मुल जहान उते,
एहनां मूज़ियां ने लक्खां वार वट्टे।
बदले रंग ज़माने दे कई वारी,
पर न 'वैहशिया' कौमी गद्दार वट्टे।

(3)

तेरी उच्ची ज़माने ते मैं भारत शान कर दांगा।
तेरी मैं आन दी खातिर नछावर जान कर दांगा।
जवानी हेच वे माता तेरी इस शान दी खातिर।

तेरे तों नच के सरवंस मैं कुर्बान कर दांगा।

(4)

मैं हिन्दी अपने फर्ज़ां तों कदे वी उक नहीं सकदा।
मेरा जज़बा तूफानी ए कदे वी रुक नहीं सकदा।
बड़ी वारी ज़माने ने मैंनु आज़मा के तकया ए।
ए वैहशी मर ते सकदा ए कदे वी झुक नहीं सकदा।

(5)

शहीदां दी शहादत दे फसाने बदल नहीं सकदे।
अनख ते आन पखंन दे पैमाने बदल नहीं सकदे।
ज़माना बदल सकदा ए हकीकत ए हकीकत ए।
कदे वी शेर मर्दां दे निशाने बदल नहीं सकदे।

(6)

किनारा करन वाले ते किनारे पुज नहीं सकदे।
कदे आकाश दे उत्ते हुलारे पुज नहीं सकदे।
जवानी मानदे ओईयो जवानी वारदे जेहड़े।
कदे जीवन दी मंज़िल ते नकारे पुज नहीं सकदे।

(7)

जेहड़े मंज़िल नूं लभदे ने सदा मंज़िल नूं पांदे ने।
जेहड़े चक्कर च पैंदे ने सदा चक्कर ई खांदे ने।
हनेरी रात दे अन्दर किते वी रोशनी होवे।
शमां दी लाट दे उत्ते पतंगे नच जांदे ने।

(9)

जिदे विच अनख नहीं हुंदी ओ वी इनसान नहीं हुंदा।
बिन आई मौत मर जाना कोई मर जान नहीं हुंदा।
मुंहों बोल के आंदी पई गर्दश ज़माने दी।
किसे मरदूद दा जग दे किदे वी मान नहीं हुंदा।

(10)

जदों कोई मर्द रचदा ए ते रचना रच पैंदी ए।
जदों कोई मारदा फूकां ज्वाला मच पैंदी ए।
शहीदां दा लहू वैहशी शहीदां नूँ जन्म देंदा ए।
जदों वी ढोल वजदा ए जवानी नच पैंदी ए।

(11)

अनख ते आन दी खातिर मरन दा चा बड़ा औखा।
जवानी अपनी नूं आप देना दाह बड़ा औखा।
जदों वी पर्ख हुंदी ए कोई टांवाँ ई नचदा ए।
शहादत दी ए मंज़िल मुख्तसिर पर राह बड़ा औखा

मैं वाली हिन्दुस्तान दा

(1)

मैं योधा भारतवर्ष दा मैंनूं जाने कुल जहान।
मेरे सांवें आके आकड़े ओह केहड़ा आकड़खान।
मेरे नाल याराना मौतदा मेरी गोली अनख ते आन।
मैं गुढ़ती पीती ज़ंगदी तली टिकाके जान।
मैं लक लक लोथां चाढ़ दां जद छाती निकलां तान।
मैं वाली हिन्दोस्तान दा एह मेरा हिन्दोस्तान।

(2)

मैं वैरी हां वैर दा मैं वीरां दा वीर।
मैं हामी अमन अमान दा भई मेरी अमन जागीर।
मैं पहल नहीं करनी जानदा मैं ज़ाना करन आखीर।
जिन्नूं चाह ए जंग दा ओह चुक लवे शमशीर।
मैं पल विच वैरी दलांदे चुन चुन लावां छान।
मैं वाली ...

(3)

मेरी अनख वगारे नच के ओह जमया जग ते कौन।
मैं नहीं डरदा जंग तों भई जम जम जंगां औन।
मैं सिखया हां मुढ :तों तेगां उते सौन।
मैं हरदम रखना अपनी तली टिका के धौन।
मैं नच के अपने वतन तों हो जावाँ कुर्बान।
मैं वाली.. ...

(4)

हो नहीं सकदा जग ते मैं नींवां तेगां नाल।
मैं जाम समझ के रत नूँ पीवां तेगाँ नाल।
मेरी जिंद जवानी तेग ए मैं जीवाँ तेगाँ नाल।
भई सदा लंगारे दिल दे मैं सीवां तेगाँ नाल।
मैं इंज चकरावाँ मौत नूं ज्यों झंझट चक्कर खान।
मैं वाली......

(5)

कोई टप नहीं सकदा भुल के जेहड़ी लीक दियां मैं लीक।
मैं धड़ धड़ धौना केरदा मैंनु दिती रब्ब तोफीक।
मैं रत वैरी दी दोस्ता पी जां लाके डीक।
मैं परवाना मौत दा मेरा दाईया कबरां तीक।
मेरे हत्थाँ ओहले बिजलियाँ मेरे डौलयां विच तूफान।
मैं वाली ...

चौकलिए

जवानी लाल नेरी ए जो टाली जा नहीं सकदी ।
जदों आई ते आऊंदी ए एह खाली जा नहीं सकदी ।
तूफानी दौर विच दरया किनारे तोड़ देंदा ए ।
जवानी किसे ते आवे सम्भाली जा नहीं सकदी ।

—::0::—

कौम नूं तूं हिन्दिया इक जान कर के वेख लै ।
प्यार दा वी जग ते कुज मान करके वेख लै ।
कौम तेरी जग ते चमकेगी लाज़म वैहशिया ।
एकता नूं कोम विच प्रधान करके वेख लै ।

————

दिला मौत महबूब तों क्यों डरना,
आश्क मुढ तों रिहा संग्राम दा तू ।
तेरा कम है कौम लई जान देना,
फिकर कर न कदे अंजाम दा तूं ।
चन्ना जाम बनाके खोपरी दा,
मजा चख शहादत दे जाम दा तूं ।
दाना बन के जान दा दान कर दे,
दाना बन न कदे वी दाम दा तूं ।

———

कोई बुरा समझे भावें भला समझे,
बनके रही दा यारां दे यार जग ते ।
जेहड़ा जी आखे जी कही दा ए,
बन के रही दा ए सेवादार जग ते ।

जिन्ने छेड़ना छेड़ के छेड़ वेखे,
निरे पुरे नहीं असीं मुरदार जग ते।
बेशक वैर वधा के कोई वेखे,
दुश्मन चंगे आँ मेरी सरकार जग ते।

———

नाल सज्जनां कदे नहीं सी कीती,
दुश्मन जिदे वी रिहे हां कड़े रहे आँ।
विच वरदयां किसे नहीं साथ दिता,
खड़े असीं मैदान विच छड़े रहे आं।
सट्टां खाके कदे नहीं सी कीती,
सदा वांग चिट्टान दे अड़े रहे आं।
'वैहशी' वक्त ने भावें नहीं साथ दिता,
जित्थे खड़े होए आं ओथे खड़े रहे आँ।

———

होना देश तों जिन्हां कुर्बान सिखया,
ओह ते सोचदे कदे अंजाम न रहे।
मरने देश दे रहे ओह सदा मरदे,
घड़ी पल वी नाल आराम न रहे।
बदले तख्त दे तख्ते कबूल कीते,
सुफने विच वी कदे गुलाम न रहे।
वाह वाह जम्मना मर्द अनखीलयां दा,
सुबह जम्मे ते दुनियाँ ते शाम न रहे।

———

बदले लैने ने कौम दे वैरियां तों,
वैरी लैन साथों जम जम बदले।

मर्द कदे निशानयो चूकदे नहीं,
कम औंदे ने कौम दे कम बदले।
सुख दुनियां दे गमां तों वार दईये,
मिले गम जे कौम दे गम वदले।
वध के 'वैह्शिया' एस तों खुशी की ए,
निकले दम जे कौम दे दम बदले।

———

सड़ भुज के नही तकदीर बदली,
किसमत विच परवाने दे ठेडे ई रहे।
हर इक मोड़ ते ठेडयां मोड़ दिता,
अगे पिच्छे दीवाने दे ठेडे ई रहे।
मारे गमाँ दे गमों मजबूर होके,
खाँदे विच मैखाने दे ठेडे ई रहे।
दिता कदे तकदीर न साथ 'वैहशी',
वजदे विच ज़माने दे ठेडे ई रहे।

————

मेरे रोकयां दिल दे जज़बे नहीं रुकदे,
मैं डक डक के जज़बे सम्भाले हजारां,
वतन नूं अजे तक बना कोई नहीं सकया,
वरम मेरी हिक ते ने हाले हज़ारां,
जदो वेखना आं गद्दारां दे कारे,
मेरे दिल ते वजदे ने भाले हज़ारां,
मैं हस के हसावां ज़माने नूं किद्दां,
मेरी जीभ उते ने छाले हज़ारां।

———

ज़ानां लड़ावन जानना

(1)

भारतवर्ष दे योद्धया मर्दा मैदाना दूलया,
खफ़्फ़न सिरांते बन्ह के दस दे तूं शानां दूलया,
दुनियां झुका के दस दे शेरा जवाना दूलया,
मन्नियां होईयाँ ने तेरियाँ अनखां ते आनां दूलया,
हिक्कां ज़रा हुन तान के दस दे खां तानां दूलया।
जानां लड़ावन जानना तैनूं मैं जानां दूलया।

2)

तेरे फसाने अनख दे तैनुं सुनावां दूलया,
लैंदा रिहा ए मौत दे वेहड़े च लांवां दूलया,
सड़ सड़ के तेथों सिखीयां पम्मट अदावां दूलया,
तेरे जेहा कोई जम्मया दुनियाँ च टांवां दूलया,
कुच्छड़ च तेनूं पालया मुढों तूफानां दूलया।
जानां लड़ावन......

(3)

तूं ते हमेशा मौत नूं जीवन निशाना रखया,
साकी बना के तेग नूँ वसदा मैखाना रखया,
सागर पिला के अनख दे हिन्दी दीवाना रखया,
जज़बे तों परखन वास्ते खफ्फन पैमाना रखया,
तूं ए फरिशता मौत दा तैनुं पछानां, दूलया।
जानां लड़ावन......

(4)

सांवें बहाके मौत नूँ सांवें मनावें हीरया,
होनी क्लावे चुक के भंगडा तूं पावें हीरया,

होल मचाके लहू दी जज़बे मचावें हीरया,
तेगां दे उते नच के सिरियां नचावें हीरया,
मर के वी तूं न परतियां करके जबानां दूलया।
जानाँ लड़ानां ....

(5)

जंगाँ दे रंगां विच तूं रंगया रिहा एं दूलया,
मुढों अनख दे नाग दा डंगया रिहा एं दूलया,
मुढों एं तूं घर मौत दे मंगया रिहा एं दूलया,
अगे तूं तेगां वाहन विच लंगया रिहा एं दूलया,
दिती जवानी कौम नूँ तेरे निशानाँ दूलया।
जानाँ लड़ानां.....

(6)

जदों देश ते कौम दी मंग आवे,
सिर तली ते धरन दा चा आऊंदा।
जदो नचदी मौत मैदान अन्दर,
सानूं नच के मरन दा चा आऊंदा।
जंगी साज़ जद आन के खड़कदे ने,
लाड़ी मौत नूँ वरन दा चा आऊंदा।
जदों लहू दे विच शमशीर तरदी,
वैहशी तारीयां तरन दा चा आऊंदा।

(7)

पा के लुडियां नचदी रही मुढों,
सदा मोढया ते अनख आन साडे।
सानूँ परखेया वक्त ने कई वारी,
जज़बे रहे ने सदा तूफान साडे।

सड़ सड़ के वाँग परवानियाँ दे,
मुक्के कदे नहीं मर्द मैदान साडे।

साडा रिहा ए धर्म इमान एहो,
सीस देश तों होन कुर्बान साडे।

(8)

मरन लगयां देश प्यार उते,
लाये कदे नहीं हिन्दी दे लाल वट्टे।

सानूं किसे वगांरया जदो आके,
असाँ लाहये ने तेगां दे नाल वट्टे।

भुखे रह के देश प्यार खातिर,
खांदे रहे हां असी उबाल वट्टे।

वट्टी वांग ज़माने ने वट्ट दिता,
वैहशी नहीं ज़माने दे नाल वट्टे।

गलत शब्दों का चार्ट

गलत छप गया ए		इस तरहां ठीक पढ़ो ।
सफा 3 दूजा बन्द पहली लाईन	कट	नच
,, 4 चौथा बन्द चौथी लाईन	केडनी	खेडनी
,, ,, ,, ,, पंजवीं लाईन	अस	असों
,, ,, पंजवां बन्द दूजो लाईन	गाने	गान्ने
,, 5 पहला बन्द तीजी लाईन	गावन	गौनाँ
,, 5 दूजा बन्द तीजी लाईन	'कल दी गल दे अग्गे'	ए
,, 5 तीजा बन्द दूजी लाईन	खून तेग	ख़नी तेग
,, 6 पंजवां बन्द दूजी लाईन	हैंटर मार	हैंटर नाल
,, 8 ग्यारहवां बन्द चौथीं लाईन	कढिया	कढ लिया
,, 9 पहला बन्द दूजी लाईन	फेर उडारां	भौर उडारां
,, 9 पहला बन्द तीजी लाईन	लाहयां कोई	ला गया
,, 10 चौथा बन्द दूजी लाईन	बाल बने	वाल बने
,, 10 पंजवां बन्द दूजी लाईन	रत्ती होवे	रत्ती खलोवे
,, 11 दूजा बन्द पंजवीं लाईन	शाँ	छां
,, 13 ,, ,, पहली लाईन	एहनाँ	ग़ैराँ
,, 13 ,, ,, दूजी लाईन	नाल संगीन	नाल संगीनां
,, 13 तीजा बन्द पहली लाईन	'ओहनां' दे अग्गे	नूं
,, 13 चौथा बन्द तीजी लाईन	तांतलेबाज	तांतीयेबाज़
,, 14 ,, ,, पंजवीं लाईन	सूफी लद	सूफी ला
,, 16 पहला बन्द पहली लाईन	पई	पाया
,, 16 पहला बन्द छेवीं लाईन	वजे	रज्जे
,, 16 दूजा बन्द तीजी लाईन	बलयां	बेलीया
,, 16 तीजा बन्द चौथी लाईन	ओहदी वज्जी धार	लहू दी वग्गी धार

गलत छप गया ए		इस तरहाँ ठीक पढ़ो
सफा 17 छेवां बन्द दूजी लाईन	सिर दे अग्गे	धड़
,, 20 पहला बन्द पंजवीं लाईन	हर दम रोज़ दे अग्गे	पई
,, 21 चौथा बन्द दूजी लाईन	गमां	गमीयां
,, 24 पंजवां बन्द पहलो लाईन	नां तों	नां नूँ
,, 28 छेवां बन्द पहली ,,	सदियां तूं	सदियां बाद
,, 28 ,, ,, दूजी ,,	बेपीरे वतीर	बेपीर दे तीर
सफा 30 पंजवाँ बन्द दूजी लाईन	उमंग	मंग
सफा 31 तीजा बन्द पहली ,,	कौम	कौमी
सफा 32 चौथा ,, ,, ,,	सदकया	बखशिया
,, ,, ,, ,, चौथी लाईन	नेश	देश
,, ,, पञ्जवां वन्द दूजी ,,	बांग	वांग
,, ,, छेवां बन्द पञ्जवां ,,	एहो	ऐवे
,, 34 चौथा बन्द पञ्जवीं लाईन	'गवा' दे अग्गे	के
,, 45 तीजा ब्रन्द ११वीं ,,	ऐहदा	ऐहदी
,, 45 तीसरा ,, सतवीं ,,	नहीं	कीह
,, 55 सत्तारवाँ बन्द चौथी लाईन	मौम	मौत
,, 55 ,, ,, ग्यारवां लाईन	रायो	राणे
,, 69 दूसरा बन्द पंजवीं लाईन	चर्वियाँ	चर्बियां
,, 87 चौथा बन्द तीसरी लाईन	तेग सुति	तेगां सुतियाँ
,, 90 अठवाँ बन्द सतवीं लाईन	हनेर	नेएर
,, 91 पहला बन्द ग्यारहवीं लाईन	तद	जद
,, 105 पहला बन्द पंजवीं लाईन	तरना	तुरना
,, 105 ,, ,,	कटाराँ	लकारां

————